सहजानंद शास्त्रमाला

समस्थान-सूत्र विषयदर्पण

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

सर्वाधिकार सुरक्षित

ॐ 卐 ॐ

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

(६)

समस्थानसूत्रविषयदर्पण

लेखक :—

आध्यात्मिक सन्त, शान्तमूर्ति, न्यायतीर्थ, पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक वर्णी मनोहर जी 'सहजानन्द' महाराज

सम्पादक :—

रतनलाल जैन एम० कॉम

मेरठ सदर

प्रकाशक :—

मंत्री, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

वि० सं० २०११ | वीर निर्वाण सं० २४८० [ई० १९५४

प्रथम संस्करण | [मूल्य =॥)

इस पुस्तक की १० प्रति खरीदने पर १ प्रति बिना मूल्य

समस्थानसूत्रविषयदर्पण

मंगलाचरणम्

सहजानन्दसम्पन्नमेकं नत्वा शिवम् समम् ।
समस्थानगसूत्राणां न्यस्यन्ते विषयाः क्रमे ॥१॥

	अध्याय–सूत्र
सर्वके अद्वैतका वर्णन	१-१
उसका हेतु	१-२
द्वितीय हेतु	१-३
संग्रहदृष्टिसे वर्णन	१-४
उसका हेतु	१-५
नैगमदृष्टिसे वर्णन	१-६
उसका हेतु	१-७
परमभावसे वर्णन	१-८
उसका हेतु	१-९
उस हेतुसे निर्णय	१-१०
हेतुपूर्वक समर्थन	१-११
इस निर्णीत अवस्थाकी अशक्यता	१-१२
उसका हेतु	१-१३
परिभाषणका फल	१-१४

व्यवहारसे भेदप्ररूपणा १-१५
उसके प्रयोजन १-१६
प्रयोजनोंका स्पष्टीकरण १-१७
धर्मध्यानका प्रयोजन १-१८
सत्यसमृद्धि १-१९
उसका अभिन्नकारण १-२०

द्वितीय अध्याय

अकिंचित्कर हेत्वाभास २-११५
अग्निकायिक २-१४६
अग्निकायिक २-१६३
अघातिया कर्म २-१२०
अजन्यज्ञातृव्यापारके भावरूपपर विकल्प २-३७५
अजीवद्रव्य २-३५९
अतिकायव्यन्तरेन्द्रकी वल्लभिका २-२०१
अतिकायकी गणिकामहत्तरी २-२१७
अद्वैतस्वरूपके खण्डक विकल्प २-४१४
अध्यवसान २-२८३
अध्यवसान २-२८४
अन्यथानुपपद्यमानत्वागमकी संभावना २-४२४
अन्यथानुपपद्यमानत्वागमका प्रमाणान्तरसे अवगम माननेपर खण्डक विकल्प २-४२५

अनशन	२-३६७
अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान	२-१६०
अनादिसम्बद्धशरीर	२-१५०
अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्ती	२-८६
अनुपलब्धि हेतु	२-३५२
अनुपस्थान	२-१७४
अनुमानको अप्रमाणमाननेपर खं० वि०	२-४२२
अनुमान	२-११४
अनुमानको गौणताके हेतु अप्रभाव मानने पर, खं०	२-४२१
अनुमानाङ्ग	२-१७३
अनुस्नान	२-१७५
अनैकान्तिक हेत्वाभास	२-४०७
अप्रत्याख्यान	२-२८२
अप्रतिक्रमण	२-२८१
अप्रतिघातशरीर	२-१४६
अप्रमत्त	२-८१
अप्रशस्तनिदान	२-१७६
अपर्याप्त नारक	२-४७२
अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती	२-८५
अपूर्वकरण प्रथम भागबंध व्युच्छित्ति	२-२६२
अभाषात्मक शब्द	२-१७६

अभिघट दोष	२-१८४
अभेदब्रह्मसिद्धिके कारण पर विकल्प	२-३८८
अयन	२-३३६
अर्थापत्तिको प्रमाणान्तर माननेपर खंडक	२-४२३
अर्थज्ञप्ति से अस्वसंविदितज्ञान सिद्धि माननेपर खं०	२-४१६
अर्थ	२-३१६
अरतिद्विक	२-३४६
अव्वोगाढोत्तर प्रकृति बंध	२-४४८
अवग्रह	२-१११
अवधिज्ञान	२-१२
अवधिज्ञान	२-१७
अविचार भक्त प्रत्याख्यान	२-२६८
अविनाभाव	२-३४१
अविरति	२-११०
अशुचित्व	२-११८
अशुद्धोपयोग	२-१०३
अशुभमनोयोग	२-२६७
अस्मदादिके ज्ञानको ज्ञानांतरवेद्यमाननेपर खं०	२-४३३
असद्भूतव्यवहार	२-२७८
असिद्धहेत्वाभास	२-३६५
असंज्ञिपञ्चेन्द्रियजीवसभास	२-१५७

अहिंसा	२-५६
अक्षीणऋद्धि	२-१६१
अज्ञानचेतना	२-१२६
आकाश	२-३२
आत्मा व ज्ञानके अप्रतीयमान माननेपर वि०	२-४४२
आद्यद्वीपसमुद्राधीश	२-२४२
आदिमत्परिणाम	२-१८०
आभ्यन्तरहेतु	२-३२३
आयु	२-१०६
आर्य	२-१४०
आश्रव	२-४५
आश्रवाधिकरण	२-१६६
आहारकद्विक	२-६७
आहारकमार्गणा	२-१५१
इन्द्रिय	२-६३
इन्द्रियवृत्तिकी प्रमाणतापर विकल्प	२-३७२
ईश्वरमें नित्यज्ञानद्वय माननेपर खं० वि०	२-४२६
ईश्वरका वह द्वितीयज्ञान माननेपर खं०	२-४३०
उत्कृष्ट आयुसमान	२-४७६
उत्कृष्ट श्रावक	२-३७
उत्तमभोगभूमि	२-२२६

उत्तरप्रकृतिबंध	२-४४७
उद्दिष्टत्यागीश्रावक	२-३६
उदय	२-१४३
उदयप्रकृति	२-२६५
उपचरितस्वभाव	२-२६०
उपनयाभास	२-४४५
उपयोग	२-६
उपलब्धिहेतु	२-३५३
उपशम	२-३५४
उपशमसम्यक्त्व	२-८२
उपशमश्रेणियोगी	२-८४
उपशान्तमोहमें उदयव्युच्छित्ति	२-२६३
ऋजुविपुलमतिमें विशेषक	२-३३७
ऋजुसूत्र	२-२८६
एकदिशिकसमुद्घात	२-३६४
एकान्त	२-१३०
एकदेशाभिघट	२-१८५
एकोपलम्भके खण्डक विकल्प	२-४१२
ओजराशि	२-३६३
औदारिकद्विक	२-६८
औदारिककाययोग	२-४५०

औदारिकमिश्रकाययोगी	२-४५१
औपशमिकभाव	२-६४
क्रिया	२-३८०
क्रिया ऋद्धि	२-२६४
कदंबकपातालपार्श्ववर्तीपर्वत	२-२३६
कदंबकपातालपार्श्व पर्वत निवासी देव	२-२३७
कर्म	२-११७
कर्म	२-११८
कर्म	२-४६
कर्म	२-३४६
कर्म	२-३४७
कर्मभूमिजनर	२-६६
करणकृति	२-३६०
कल्पांश	२-१३६
काम	२-३३०
कर्माणकाययोगी	२-४५४
कर्माणशरीरकी मूलकरणकृति	२-३६२
कायत्याग	२-३६६
कारक	२-३१०
कारण	२-४१०
काल	२-३६

कालभूतेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२२६
कालभूतेन्द्र की वल्लभिका	२-२१०
कालोदधिसमुद्रके अधीशदेव	२-२४४
किंपुरुषव्यन्तरेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२१२
किंपुरुषव्यन्तरेन्द्रकी वल्लभिका	२-१९६
किन्नरव्यन्तरेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२१३
किन्नरव्यन्तरेन्द्रकी वल्लभिका	२-१९७
कुमतिज्ञान	२-४५५
कुश्रुतज्ञानी	२-४५६
केवली	२-५२५
गंध	२-१२५
गीतरतिगन्धर्वेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२१८
गीतरतिगन्धर्वेन्द्रकी वल्लभिका	२-२०२
गीतयशगन्धर्वेन्द्रकी वणिकामहत्तरी	२-२१९
गीतयशगन्धर्वेन्द्र की वल्लभिका	२-२०३
गुण	२-३०
गुणपर्याय	२-१८६
गोत्र	२-७५
घृतवरद्वीपाधीश	२-११९
घृतवरसमुद्राधीश	२-२५२
घातियाकर्म	२-११९

चतुरिन्द्रियजीवसमास	२-१५४
चारित्र	२-२०
चारित्र	२-१८६
चारित्रार्य	२-२२६
चेतना	२-१२८
चौथे नरकमें सम्यग्दृष्टि	२-४६६
छटे नरकमें सम्यग्दृष्टि	२-४६८
छाया	२-३२१
जगतके शब्दमयत्वके कारणपर वि०	२-३८७
जघन्यभोगभूमि	२-२३१
जडप्रतिभासायोगके खंडकविकल्प	२-४१३
जडताके ही प्रतिभास माननेपर विकल्प	२-४३८
जन्य अक्रियात्मक ज्ञातृव्यापारपर विकल्प	१-३७७
जलकायिक	२-१४५
जलकायिक	२-१६२
जिन	२-४२०
जिनबिम्ब	२-४०२
जीव	२-३
जीवपरिणति	२-६६
जीवसमास	२-२७१
जीवसमास	२-२७२

जीवाजीवबंध	२-३१६
त्याग	२-१४१
त्रीन्द्रियजीवसमास	२-१५३
तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्य	२-२६०
तप	२-१३८
तिर्यग्द्विक	२-१०६
तृतीयनरकमें सम्यग्दृष्टि	२-४६५
तैजसद्विक	२-१००
तैजसशरीरकीमूलकरणकृति	२-३६६
द्रव्यकृति	२-३८६
द्रव्यजिन	२-३६४
द्रव्यनैगम	२-४४३
द्रव्यपरिवर्तन	२-६०
द्रव्यनिक्षेपरूपकर्म	२-२५६
द्रव्यसमान	२-४७५
द्रव्यार्थिकनय	२-६७
द्वयक्षरमंत्र	२-३५५
,,	२-३५६
,,	२-३५७
,,	२-३५८
द्वितीयनरकमें सम्यग्दृष्टि	२-४६४

द्वीन्द्रिय जीवसमास	२-१५२
दर्शन	२-१८
दर्शनबालमरण	२-२६६
दर्शनावरणोदयस्थान	२-२६६
दर्शनमोहकीसर्वघाती प्रकृति	२-१७२
दुःख	२-३३२
दृष्टान्त	२-११२
देव	२-१३४
देवद्विक	२-१०८
देवगतिके वेद	२-१६६
देवजीवसमास	२-१५६
ध्याता	२-३१४
धातकीखंडके अधीश देव	२-२४३
नन्दीश्वरद्वीपाधीश देव	२-२५५
नन्दीश्वरसमुद्राधीश देव	२-२५६
नमस्कार	२-५३
नमस्कार	२-१७१
नय	२-२७
नय	२-२८
नरकद्विक	२-१०५
नारकजीवसमास	२-१६०

निग्रहस्थान	२-४०५
निगोद	२-७२
निगोद	२-१४८
निगोद	२-१६५
नित्यनिगोद	२-७३
नित्यनिगोद	२-७४
निदान	२-१२२
निर्जरा	२-५०
निर्देश	२-३६०
निर्माण	२-११४
निर्वर्त्तना	२-९२
निश्चयनय	२-६५
निश्चयनय	२-६६
नैगमनय	२-३३८
नैगमनय	२-४७४
प्रतिभास्य	२-४०९
प्रतिरूपपिशाचेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२२५
प्रतिरूपपिशाचेन्द्रकी वल्लभिका	२-२०९
प्रत्याख्यान	२-४५
प्रत्यक्ष	२-८
प्रत्येकवनस्पती	२-७१

प्रतिष्ठा	२-४०३
प्रमत्तविरतमें आश्रवव्युच्छित्ति	२-२६७
प्रमाण	२-७
प्रमाण	२-२६१
प्रमाण	२-३२४
प्रमाणके फल	२-४४४
प्रमेयद्वित्वसे प्रमाणद्वित्वके ज्ञानमें विकल्प	४-४७७
प्रायोगिक बंध	२-३१८
पञ्चेन्द्रिय	२-५
प्रमाणविषय	२-३४३
पदभंग	२-२६६
पदार्थ	२-२
पर्याय	२-३१
पर्यायार्थिकनय	२-६८
परमाणुओंके बंधके कारण	२-३३५
परमात्मभवनार्थोपासना	२-३३३
परमार्थिक प्रत्यक्ष	२-६
परमात्मा	२-३४
परिग्रह	२-११६
परिणाम	२-३२७
परिमाण	२-३०६

परिहारविशुद्धिसंयत	२-४७१
परोक्षप्रमाण	२-११
परोक्षफल	२-३०५
पांचवे नरकमें सम्यग्दृष्टि	२-४६७
पातालपातालपार्श्ववर्ती पर्वत	२-२३८
पातालपातालपार्श्वपर्वतनिवासीदेव	२-२३९
पाप	२-४६
पापाश्रवद्वार	२-२९६
पुद्गल	२-३३
पुण्य	२-४७
पुण्य	२-१२१
पुण्याश्रवद्वार	२-२९५
पुष्कराद्ध मानुषोत्तराधीश देव	२-२४५
पुष्कराद्धोत्तराधीश देव	२-२४६
पूर्णभद्र यक्षेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२२१
पूर्णभद्र यक्षेन्द्रकी वल्लभिका	२-२०५
पृथ्वीकायिक	२-१६१
पृथ्वीकायिक	२-१४४
फल	२-३०३
फल	२-३०४
फलाभास	२-४०४

वडवामुखपार्श्ववर्ती पर्वत	२-२३४
वडवामुखापार्श्वपर्वतवासी देव	२-२३५
बन्ध	२-४८
बन्ध	२-१३८
बादरएकेन्द्रिय जीवसमास	२-१५५
वारुणीद्वीपाधीश देव	२-२४७
वारुणीसमुद्राधीश देव	२-२४८
बालप्रयोगाभास	२-१६५
बालप्रयोगाभास	२-४०८
बाह्यहेतु	२-३२४
बैस्रसिकबन्ध	२-३१७
भङ्ग	२-२६८
भयद्विक	२-३५०
भाव	२-३२८
भावनिक्षेपरूपकर्म	२-२६१
भावप्राण	२-१४२
भाषात्मक शब्द	२-१७८
भीमेन्द्रगणिकामहत्तरी	२-२२२
भीमराक्षसेन्द्रकी बल्लभिका	२-२०६
भूतसे चैतन्यकी उत्पत्ति माननेपर वि०	२-४४१
भूमि	२-३४

भूयोदर्शनसेअन्यथानुपपद्यमानत्वकाअवगमपर खं०	२-४२६
भोगभूमि	२-१३३
भोगभूमिजवेद	२-१६७
भोगभूमिजतिर्यञ्च	२-१३२
म्लेच्छ	२-३१५
मङ्गल	२-३०१
मङ्गल	२-३०२
मणिभद्रयक्षेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२२०
मणिभद्रयक्षेन्द्रकी वल्लभिका	२-२०४
महाकालयक्षेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२२७
महाकालयक्षेन्द्रकी वल्लभिका	२-२११
महाकाय उरगेन्द्र की गणिकामहत्तरी	२-२१६
महाकाय उरगेन्द्र की वल्लभिका	२-२००
मतिज्ञान	२-१५
मध्यमभोगभूमि	२-२३०
मन	२-५६
मनःपर्ययज्ञान	२-१३
मनुष्यद्विक	२-१०७
महापुरुष किं पुरुषेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२१५
महापुरुष किं पुरुषेन्द्रकी वल्लभिका	२-१९९
महाभीमराक्षसेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२२३

" " वल्लभिका	२-२०७
मानसिक विनय	२-४०१
मितकालकायत्याग	२-४००
मिथ्याचारित्र	२-२३
मिथ्यादर्शन	२-२१
मिथ्यादृष्टि	२-७६
"	२-८०
मिथ्याज्ञान	२-२२
मुनि	२-१३५
मोहनीयकर्म	२-७७
मोहनीयद्विकोदयस्थानप्रकृति	२-२७४
मोहनीयद्विकबंधस्थानप्रकृति	२-२७३
मोहनीयद्विकोदयस्थानप्रकृति	२-२७५
" "	२-२७६
मोहनीयद्विकसत्त्वस्थानप्रकृति	२-२००
मोक्ष	२-२५१
मोक्षमार्ग	२-४०
युग्मराशि	२-३६२
यूपकेसरपातालपार्श्वपर्वतवासी देव	२-२४१
योग	२-६२
"	२-१०२

योगजधर्मानुग्रहके खंडक विकल्प	२-३७१
रत्नत्रय	२-३२६
राशि	२-३६१
लब्धिप्रत्ययतैजसशरीर	२-१०१
लक्षण	२-२६
लान्तवकापिष्टेन्द्रकविमान	२-२२८
व्यञ्जनपर्याय	२-१८७
व्यवहार	२-३३१
व्यवहारनय	२-२८७
"	२-२८८
व्यवहारधर्म	२-३५
व्याप्ति	२-११३
व्युत्सर्ग	२-१३७
"	२-३६८
व्रत	२-६५
वचन	२-५७
वचनप्रयोग	२-१६४
वचनसंस्कारहेतु	२-१६३
वनस्पति	२-७०
वरुणद्वीपाधीश	२-२५७
वरुणसमुद्राधीश	२-२५८

वाग्गुप्ति	२-३६६
वायुकायिक	२-१४७
,,	२-१६४
विकल्प	२-३६५
विकल्पकेद्वारा अविकल्पके अभिभवहोनेपर वि०	२-३८२
,, ,, ,, मेंनिश्चयहेतुपर वि०	२-३८३
विकलप्रत्यक्ष	२-१०
विक्रिया	२-१७०
विप्रतिपत्ति	२-४०६
विभंगज्ञानी	२-४५७
,,	२-४५८
,,	२-४५६
,,	२-४६०
,,	२-४६१
,,	२-४६२
,,	२-४६३
विरोध	२-३७६
विशेष	२-३४५
विषय	२-१२६
विहायोगति	२-१२३
वेद	२-५५

वेदनीय	२-७६
वेदनावशार्तमरण	२-३००
वैक्रियकद्विक	२-६६
वैक्रियक काययोगी	२-४५२
वैक्रियकमिश्रकाययोगी	२-४५३
वैमानिक	२-७८
शब्द	२-१७७
शरीर	२-१०४
शरीर रहित आत्माके अप्रतिभासके हठपर खं०	२-४२७
शरीरदेशसेपृथग्देशमेंस्थितआत्माकेअप्रतिभासपरखं०	२-४२८
श्रुतज्ञान	२-१४
,,	२-१६
,,	२-३०८
,,	२-३०६
श्रुतकेवली	२-२६
श्रेणि	२-८३
शून्यवादके खण्डकविकल्प	२-४१५
स्थापना	२-१२७
स्थापनाजिन	२-३६३
स्थितिबंध	२-४४६
स्वर	२-३४०

संक्रमण	२-३६६
सत्ता	२-१३१
सत्पुरुष किंपुरुषेन्द्रकी गणिकामहत्तरी	२-२१४
सत्पुरुष किंपुरुषेन्द्रकी वल्लभिका	२-१६८
सद्भूतव्यवहार	२-२७६
सद्भूतव्यवहार	२-२८०
सन्निकर्षयोग्यताके खंडक विकल्प	२-३६७
सन्निकर्षशक्ति के खण्डक विकल्प	२-३६८
सन्निकर्षसहकारी द्रव्यके खण्डक विकल्प	२-३६६
सन्निकर्षसहकारी कर्मके खण्डक विकल्प	२-३७०
सम्यक्चारित्र	२-४३
सम्यग्दर्शन	२-४१
सम्यग्दर्शन	२-८८
सम्यग्दर्शन	२-८६
सम्यग्ज्ञान	२-४२
सम्यग्दृष्टि मुख्यशक्ति	२-२८५
समय	२-३०७
समाधिमरण	२-२६२
सयोगिसमुद्घातगतप्राण	२-१६८
सर्वगतसामान्यके खंडक वि०	२-४११
सर्वपद	२-२७०

सल्लेखना	२-१३६
सविकल्प अविकल्पके एकत्वपर विकल्प	२-३८१
सविकल्प अविकल्पके एकत्वपर विकल्प	२-३८२
सविकल्प अविकल्पकेएकत्वको सादृश्यहेतुकपर	" २-३८३
सशल्यमरण	२-६१
सहभाव	२-३४२
संक्रमणप्रकार	२-२६४
संख्या	२-३१२
संग्रहनय	२-२८६
संयोग	२-६३
संवर	२-४४
संयतासंयत तिर्यञ्चसम्यग्दृष्टि	२-४७०
संस्कार	२-३३४
संस्थान	२-३११
संस्थान	२-३२०
संसारी जीव	२-४
संज्ञिपञ्चेन्द्रियजीवसमास	२-१५८
साकारज्ञानवादियोंके जडप्रतिभासमें विकल्प	२-४३६
साकारतासे ही नियतार्थबोधमाननेपर विकल्प	२-४३६
साकारतासे ही नियतार्थबोधमाननेपर विकल्प	२-४४०
सातवें नरकमें सम्यग्दृष्टि	२-४६६

सामर्थ्य	२-१८२
सामान्य	२-३४४
सामायिक	२-५२
सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष	२-४४६
सासादन सम्यग्दृष्टि	२-४७३
सीतोभयतदस्थयमकगिरि	२-२३२
सीतोदोभयतदस्थयमकगिरि	२-२३३
सुरूपेन्द्रगणिकामहत्तरी	२-२२४
सुरूपेन्द्रवल्लभिका	२-२०८
सूक्ष्मसाम्पराय	२-८७
सूक्ष्मैकेन्द्रियजीवसमास	२-१५६
हास्यद्विक	२-३४८
हिंसा	२-३४७
हेतु	२-३४६
हेतु	२-३५१
क्षीरद्वीपाधीश	२-२४६
क्षीरसमुद्राधीश	२-२५०
क्षुल्लक	२-३८
क्षेत्रऋद्धि	२-१६२
क्षेत्र परिवर्तन	२-६१
क्षौद्रद्वीपाधीश	२-२५३

क्षौद्रसमुद्राधीश	२-२५४
ज्ञातृव्यापारपर विकल्प	२-३७८
ज्ञातृव्यापारकी प्रमाणतापर विकल्प	२-३७३
ज्ञातृव्यापारकी अजन्यतापर विकल्प	२-३७४
ज्ञातृव्यापारकी जन्यतापर विकल्प	२-३७६
ज्ञान	२-१६
ज्ञानके शब्दानुविद्धत्वप्रतिभास पर विकल्प	२-३८४
ज्ञानकेशब्दानुविद्धत्वप्रतिभासमेंप्रत्यक्षहेतुपरविकल्प	२-३८५
ज्ञानकेशब्दानुविरुद्धप्रतिभासस्वरूपके खंडक विकल्प	२-३८६
ज्ञानको भूतपरिणाम मानने पर खंडक विकल्प	२-४१६
ज्ञानको साकार माननेपर खंडक विकल्प	२-४१७
ज्ञानको अस्वसंविदित माननेपर खंडक विकल्प	२-४१८
ज्ञानका स्वयंमेंक्रियाविरोध माननेपर खंडक विकल्प	२-४३१
ज्ञानकी क्रियाविरोधमें खंडक अपेक्षायें	२-४३२
ज्ञानवेदकज्ञानान्तरके खंडक विकल्प	२-४३४
ज्ञानान्तरको प्रत्यक्ष माननेपर खंडक विकल्प	२-४३५
ज्ञानान्तरसे जड़ता प्रतिभासपर विकल्प	२-४३७

तृतीय अध्याय

अङ्गोपाङ्ग	३-३६
अधर्मद्रव्यके विशेष गुण	३-११७
अधोग्रैवेयक	३-६६

अन्तरात्मा	३-३
अन्वयदृष्टान्ताभास	३-७२
अननुगामी अवधिज्ञान	३-७०
अनंत	३-१३
अनन्तानंत	३-१६
अनुगामीअवधिज्ञान	३-६६
अनुपलब्धिहेतु	३-७१
अनुसारीऋद्धि	३-६१
अप्रमत्तविरत	३-२४६
अपर्याप्त केन्द्रियप्राण	३-५४
अपर्याप्त तिर्यञ्च	३-२३८
अपर्याप्त मनुष्य	३-२३६
अपर्याप्त देव	३-२४०
अर्थकी अभिधानानुषक्तताके स्वरूपके खंडकविकल्प	३-१८२
अर्थपर्यायनैगम	३-२२६
अर्थव्यञ्जनपर्यायनैगम	३-२३०
अर्थनय	३-६३
अर्थभेदकारणके खंडकविकल्प	३-१८४
अर्थाधिकार	३-२३२
अल्पबहुत्व	३-१७२
अवधिज्ञान	३ १६३

अविकल्पाध्यक्षावसीयैकत्वस्वरूपखंडकविकल्प	३-१८३
अविचार भक्त प्रत्याख्यान	३-१३२
अशुभवचनयोग	३-१३१
अशुभलेश्या	३-५७
असद्भूतव्यवहार	३-१२५
असंख्यात	३-१२
असंख्यातासंख्यात	३-१६
असंयत सम्यग्दृष्टितिर्यञ्च	३-२४२
असंयत सम्यग्दृष्टि मनुष्य	३-२४३
अक्षर	३-६०
आकारयोनि	३-५६
आकाशद्रव्यके विशेषगुण	३-११८
आगमाभास	३-२१४
आत्मा	३-२
आनुपूर्वी	३ ७६
आहुनीय कुण्ड	३-७७
आहारकशरीरकीमूलकरणकृति	३-१६०
इन्द्रपरिषद	३-१४३
उदयत्रिभङ्गी	३-७८
उपचरितासद्भूतव्यवहारनय	३-१२६
उपनय	३-१२३

उपभोग	३-१२१
उपयोग	३-१६६
उपरिमविकल्प	३-१७३
ऊर्ध्वग्रैवेयक	३-६८
ऋजुमतिमनःपर्यय	३-१४०
एकाविभङ्ग	३-२७
एकैकद्रव्य	३-३८
औदारिकशरीरकी मूलकरणकृति	३-१८८
क्रमभावनियमाविनाभाव	३-१४६
कर्ता	३-१३६
कर्म	३-४४
कर्मार्य	३-१३०
करण	३-१५३
कायगुप्ति	३-२०८
काल	३-१५६
कालद्रव्यके विशेषगुण	३-११६
कुज्ञान	३-१६२
केवलज्ञानी	३-२४७
केवलदर्शनी	३-२४८
ग्रैवेयक	३-६५
गणनकृति	३-१८७

ममत्व	३-४८
मारव	३-८१
मुनि	३-१५६
चरित्राराधना	३-६
चित्राद्वैतसाधकाशक्यविवेचनस्वहेतुके विकल्प	३-२१६
चेतना	३-१२०
छद्मस्थ प्रमाणका परम्पराफल	३-२४६
छद्मस्थपरमेष्ठी	३-१६६
छल	३-२१३
जघन्य आयु समान	३-२५३
जन्म	३-४७
जप	३-२११
जलचरजीवाश्रयेभूतसमुद्र	३-६६
जागरणहेतु	३-१२६
जीवपरिणति	३-१६५
जीवसमास	३-११२
जीवसमास	३-११३
जैनलिङ्ग	३-३७
त्र्यक्षरमंत्रवर्ण	३-१७०
त्र्यक्षरमंत्रवर्ण	३-१७१
त्यक्तशरीर	३-१०६

तद्व्यतिरिक्ततिंज	३-१९४
तप आराधना	३-७
द्रव्यप्रमाण	३-२३४
द्रव्यपरिवर्तनके काल	३-१४६
द्रव्य शल्य	३-२००
द्रव्यार्थिकनय	३-२३३
द्रव्यार्थिकनयके निक्षेप	३-२२४
दर्शनमोहनीयकी प्रकृति	३-३४
दर्शनावरणकी देशघाति प्रकृति	३-४५
दर्शनावरणके बन्धस्थान	३-११०
दर्शनावरणके सत्वस्थान	३-१०१
दुर्भगत्रिक	३-४२
दुराशयसे उत्तर देनेके दूषणाभास	३-२१२
देवता	३-१३४
देशसंयत	३-२४४
देशावधि	३-१९५
ध्याता	३-८
ध्यानसामग्री	३-९
ध्यानाभ्यास	३-८३
धर्मद्रव्यके विशेषगुण	३-११६
धर्मी	३-१४७

नमस्कार	३–१३५
नमस्कारके तीन अङ्ग	३-६३
नय	३-२८
नक्षत्र	३-२४
नाड़ी	३-१४०
नारकसम्यग्दर्शनबाह्यहेतु	३-४०
निन्ववचन	३-२०४
निसर्ग	३-१५५
नैगमनय	३-१२४
नैगमनय	३-१२२
नैगमनयकीप्रवृत्ति	३-२२३
नोआगमजिन	३-१६२
नोआगमद्रव्यकृति	३-१८६
नोआगमद्रव्यकर्म	३-१०३
नोकर्मवर्गणा	३-३५
प्रत्यक्ष	३-१८५
प्रत्यक्षज्ञान	३-३१
प्रथम पृथ्वीके सम्यग्दृष्टिनारकी	३-२४१
प्रमाणाभास	३-२६
प्रमत्तविरत्त	३–२४५
प्रामाण्यकी स्वतः उत्पत्ति माननेपर विकल्प	३-२२१

प्रोषधोपवास	३-१०
पंचेन्द्रियतिर्यञ्च	३-१६८
पद	३-७४
पर्यायनैगम	३-२२८
परिग्रह	३-६२
परिहार	३-२१०
परीतासंख्यात	३-१५
परीतानंत	३-१८
पल्य	३-६०
पात्र	३-२५
पात्र	३-२६
पारिणामिकभाव	३-१६०
पेज्ज	३-२५०
बंध	३-७५
बंधकारण	३-१५२
बंध त्रिभंङ्गी	३-७६
बाह्यतपको वह्य कहनेके कारण	३-२०६
भक्त प्रतिज्ञा	३-२१
भव्य	३-१२२
भवपद्धति	३-३६
भवनत्रिक	३-५६

भावशल्य ३-१९९
भूतसे चैतन्यकी अभिव्यक्तिपर विकल्प ३-२१७
भोग ३-१४४
भोगभूमि ३-२०
मकार ३-८२
मघवीपृथ्वीमें इन्द्रकबिल ३-९४
मतिज्ञान ३-१३८
मध्यग्रैवेयक ३-६७
मध्यमश्रावक ३-५१
मनोगुप्ति ३-२०५
मनोगुप्तिके अतिचार ३-२०६
मिथ्यादर्शन ३-१३३
मुनि ३-२३
मुमुक्षु ३-२०२
मूढता ३-५५
मूलकर्मके उदयस्थान ३-१०८
मूलकर्मके सत्त्वस्थान ३–१०९
मूलकरणकृतिके प्ररूपक अधिकार ३-१९१
मोहनीयकी तीन बंधस्थान वाली प्रकृति ३-११४
मोहनीय की तीन सत्त्वस्थान वाली प्रकृति ३–११५
मोक्षमार्ग सामग्री ३–१९७

युक्तानन्त	३-१०
युक्तासंख्यात	३-१४
योग	३-१५४
योगस्थान	३-८४
रत्नप्रभाके भाग	३-८१
रत्नत्रय	३-१
लक्षणके दोष	३-६४
लोक	३-१५८
व्यन्तरोंके निवासके प्रकार	३-६५
व्यवहार प्रमाण	३-१७६
व्यवहारसम्यक्त्व	३-२५२
वक्तव्यता	३-२३१
वलब्धि	३-१०२
वलप्राण	३-१५७
वाग्गुप्तिके दोष	३-२०७
वात वलय	३-४६
विकलत्रिक	३-१६७
विग्रहवक्रगति	३-४६
विद्या	३-१६६
विद्याधरोंकी विद्या	३-८६
विमान	३-२२७

विल	३-२२६
विषयाभास	३-१४८
विज्ञानाद्वैतपोषकसहोपलम्भपर विकल्प	३-२१५
विदेह क्षेत्रके प्रत्येक देशोंमें तीर्थ	३-१३६
वेद	३-१६१
वेदक सम्यक्त्व के दोष	३-३३
वैक्रियक मिश्रकाययोगी	३-२३५
वैक्रियकशरीरकी मूलकरणकृति	३-१८६
श्रावक	३-२२
श्रावक	३-१२७
श्रीगृहमें होने वाले रत्न	३-१०१
शब्दनय	३-७३
शल्य	३-८६
शास्त्र	३-८८
शुभभाव	३-२०१
शुभलेश्या	३-५८
षट्पर्याप्तिपूर्णकरनेवाले	३-२३६
षट् अपर्याप्तिवाले	३-२३७
स्कंधोत्पत्ति हेतु	३-१४५
स्त्यानगृद्धित्रिक	३-४०

स्वर्गादिकके विमानोंके प्रकार	३-१४२
स्वशरीरसे आत्माको भिन्न न माननेपर विकल्प	३-२१८
स्वज्ञान को स्वसंविदित न माननेपर विकल्प	३-२१९
सकल प्रमाणोंके स्वतः प्रामाण्य माननेपर विकल्प	३-२२०
सत्त्व त्रिभङ्गी	३-८०
सत्त्वसामग्री	३-१९८
सन्निकर्ष सहकारीके खडक विकल्प	३-१७७
सन्निकर्ष सहकारी अव्यापि द्रव्यके खंडक विकल्प	३-१७८
सन्निकर्ष सहकारी गुणके खंडक विकल्प	३-१७९
सन्यस्त क्षपकके सुनने योग्य कथा	३-१२८
सम्यक्त्वाराधना	३-४
सम्यग्दर्शन	३-३२
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	३-२५१
समय	३-१३७
समाधिमरण	३-९२
सराग मुनि	३-१०७
सविकल्पाविकल्पैकत्वाध्यवसायके खंडकविकल्प	३-१८०
सविकल्पाविकल्पैक अध्यवसायकके खंडकविकल्प	३-१८१
संक्रान्ति	३-१७४
संक्रान्ति	३-१७५
सख्यात	३-११

संज्ञिमार्गणा	३-५३
सागर	३-६१
सीतानदीके उत्तर तटपर विभंगानदी	३-९७
सीतानदीके दक्षिण तटपर विभंगानदी	३-९८
सीतोदानदीके उत्तर तटपर विभंगानदी	३-१००
सीतोदानदीके दक्षिण तटपर विभंगानदी	३-९९
सुखादिकेभिन्न माननेपरभी संबंध सिद्ध करनेपरविकल्प	३-२२५
सूक्ष्मत्रिक	३-४१
सूत्रोपसंपत्	३-८७
हेतु	३-३०
क्षायोपशमिक दर्शन	३-१६४
क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	३-१५१
त्रसत्रिक	३-४३
ज्ञातप्रमेयद्वित्वसे प्रमाणद्वित्वके ज्ञानमें विकल्प	३-२५४
ज्ञानके अतिचार	३-२०३
ज्ञानाराधना	३-५
ज्ञायकशरीर	३-१०४
ज्ञायक भूत शरीर	३-१०५
ज्ञायकशरीरके आगमद्रव्यजिन	३-१९३
चतुर्थ अध्याय	
अकृत्रिमप्रासादद्वार	४-१३२

अगुरुलघुचतुष्क	४-३५
अघातिया कर्म	४-४२
अङ्गुल	४-५६
अजीव	४-२१६
अन्तःस्थ	४-१८१
अन्तरायाश्रवहेतु	४-१६७
अन्वयदृष्टान्ताभास	४-६४
अनन्तचतुष्टय	४-२०६
अनंतानुबन्धीकषाय	४-५
अनाहारक	४ २५७
अनुपालना शुद्धि	४-६६
अनुजीवीगुण	४-२१०
अनुगम	४-२२४
अनुमानसेअस्वसंविदितज्ञानसिद्धिकेसाधनपरविकल्प	४-२३८
अनुयोग	४-१००
अप्रत्याख्यानावरण	४-६
अप्रतिपत्ति	४-२३५
अप्रमत्तमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	४-१५५
अपर्याप्त द्वीन्द्रियके प्राण	४-५५
अपूर्वकरणके चरमभागमें बन्धव्युच्छिन्न प्रकृति	४-१५३
अभाव	४-६६

अभिन्नदशपूर्वसूत्र	४-७५
अमूर्तअरितकाय	४-४४
अरतिवेदनीयाश्रवहेतु	४-२०६
अवतार	४-२४२
अवधिमनःपर्ययविशेषक	४-२२२
अवधिविषय	४-२२७
अशन	४-६८
अशनके स्फुटदोष	४-८१
अशुभकाययोगकी जाति	४-१८७
अशुभनामकर्मके आश्रवहेतु	४-१६५
अभ्यवचन	४-७२
असंख्यातवारविराध्य	४-१५६
असंयमके गुणस्थान	४-३६
आनुपूर्व्य	४-३
आयु	४-२
आयुधगृहभावीरत्न	४-१३०
आर्तध्यान	४-२३
आरा इन्द्रके दिशाबिल	४-१०४
आराधना	४-४०
आश्रम	४-७६
आश्रव	४-३०

आश्रवमुख्यदोष	४-२०३
आहार संज्ञाके बाह्यहेतु	४-८०
आहारके महादोष	४-१८३
ईर्यापथ शुद्धि	४-७६
उपसर्ग	४-१८४
ऊषया	४-१८२
एक लखा	४-२६३
ऋषि	४-८३
एकेन्द्रियके जीवसमास	४-५६
एकोपलम्भरूपसहोपलंभके खंडकविकल्प	४-२३७
औद्देशिक	४-७०
औदारिक मिश्रकाय योगी	४-२५३
क्रोध	४-१०
क्रोध	४-१४
कथा	४-५३
कर्म	४-१५०
कर्मसंज्ञा	४-१५१
कर्मभूमिजमनुष्यजीवसमास	४-६८
कल्पेन्द्रोंकी गणिकामहत्तरीकी पुरीके नाम	४-११४
कल्पोपन्नोंके प्रविचार	४-१६७
कषाय	४-४

कषाय	४-६
कषायवशार्तमरण	४-१६०
कषायविवेक	४-२२६
कापोतालेश्यावालेजीव	४-२५२
कायोत्सर्ग	४-८२
कार्माणकाय योगी	४-२५४
कारकसाकल्यके खंडकविकल्प	४-२२१
कुशील	४-२४१
केवलिसमुद्घात	४-८६
कृष्ण लेश्या वाले जीव	४-२५०
ग्रन्थकृति	४-२२५
गजदन्त	४-१२२
गति	४-१
घातियाकर्म	४-४१
चतुरक्षरमंत्रवर्ण	४-२१४
चतुरक्षरमंत्रवर्ण	४-२१५
चन्द्रकी मुख्य देवी	४-११०
चारित्र	४-२१३
चारित्रमोहनीयके आश्रवमुख्यहेतु	४-१६२
जम्बूद्वीपचतुर्दिग्द्वार	४-१३३
जिन	४-२२६

जीवविभावगुणपर्याय	४-१७६
जीवस्वभावगुणपर्याय	४-१७७
जीवसमास	४-१६८
जीवसमास	४-१६६
ततक इन्द्रकके दिशाबिल	४-१०२
तप्तइन्द्रकके दिशाबिल	४-१०३
तमक इन्द्रकके दिशाबिल	४-१०५
द्रव्यप्रदर्शकनय	४-२६०
द्रव्यपर्यायनैगम	४-२५६
द्रव्यपरिवर्तनके प्रकार	४-२१६
द्वीपमध्यपरिक्षेपीपर्वत	४-१०६
दर्शनोपयोग	४-२११
दर्शनावरणकी चारप्रकृतिके उदयस्थानवाली प्रकृति	४-१७३
दर्शन मार्गणा	४-५०
दर्शनावरणकी तृतीयबन्धस्थानकी प्रकृति	४-१७०
दर्शनावरणके चारप्रकृतिके सत्त्वस्थानकी प्रकृति	४-१७१
दान	४-८७
दान	४-८८
दानविशेषके हेतु	४-२०१
दिशा	४-६३
दुःषमाके अन्तमें चतुर्विधसंघप्रधान	४-१३१

देव	४-४५
"	४-२४७
देवचतुष्क	४-३३
देवगतिमें सम्यग्दर्शनके बाह्यसाधन	४-४८
देशसंयतगुणस्थानमें बन्धव्युछिन्नप्रकृति	४-१५२
दोष	४-६५
ध्यान	४-२२
ध्यानसामग्री	४-१६४
धर्म्यध्यान	४-२५
धर्मके लक्षण	४-२०७
नन्दनवनस्थ भवन	४-११६
नन्दीश्वरद्वीपमें वन	४-१३६
नन्दीश्वरद्वीपमें पूर्वदिशिवापी	४-१४०
" " " के अधीशदेव	४-१४१
नन्दीश्वरद्वीपमें दक्षिणदिशिवापी	४-१४२
" " " के अधीशदेव	४-१४३
नन्दीश्वरद्वीपमें पश्चिमदिशिवापी	४—१४४
" " " के अधीशदेव	४-१४५
नन्दीश्वरद्वीपमें उत्तरदिशिवापी	४ १४६
" " " के अधीशदेव	४-१४७
नमस्कारके अङ्ग चार	४-६२

नरक चतुष्क	४-१५७
नारक	४-२४५
नाभिगिरि	४-१२८
निक्षेप	४-२१२
नील लेश्यावाले जीव	४-२५१
प्रकृतिबन्ध	४-६७
प्रत्याख्यानावरण	४-७
प्रमाणफल	४-२५८
प्रज्ञा	४-२२८
प्रशस्तराग	४-२३०
प्रायोगिकशब्द	४-७३
पञ्चेन्द्रिय जीवसमास	४-५७
पण्डित मरण	४-१८८
पद	४-२०४
पर्याप्त एकेन्द्रियके प्राण	४-५४
पर्याप्त नरक	४-२४६
" देव	४-२४८
परस्परविरोधि सद्भाव	४-२१७
पाण्डुकवनमें शिला	४-१२१
पाण्डुकवनमें भवन	४-११८
पापानुभाग	४-२०

पापोपदेश	४-७७
पुण्यानुभाग	४-२१
पुद्गलके गुण	४-४३
पुद्गलभेद	४-१६६
बंध	४-३१
,,	४-३२
भयवेदनीयनोकषायाश्रव हेतु	४-२०५
भव्य	४-२००
भव्याभव्यसाधारण लब्धि	४-२१८
भवविपाकी	४-१४८
भावना	४-८५
भोगभूमिज तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रियके जीवसमास	४-६६
,, ,, ,,	४-६७
भोगभूमिज मनुष्य जीवसमास	४-६६
मङ्गलके प्रयोजन	४-८६
मनुष्यायुर्वन्धके मुख्य हेतु	४-१६३
मनोयोग	४-२७
महाविकृति	४-१८५
माघवीइन्द्रकके दिशाविल	४-१०७
मान	४-११
मान	४-१५

माया	४-१२
माया	४-१६
मुक्तजीवोंकी उर्ध्वगतिके कारण	४-१९३
मुद्रा	४-२३३
मूल कर्मके बन्धस्थान	४-१५८
मूलाश्रवस्थान	४-१६०
मेरुवन	४-११५
मेरुवनस्थभवनाधिपति	४-११९
मोहनीयचतुष्कबंधस्थानप्रकृति	४-१७२
मोहनीय चतुष्कोदयस्थानप्रकृति	४–१७४
मोहनीय चतुष्क सत्त्वस्थानप्रकृति	४-१७५
यथाख्यातविहार शुद्धि संयत	४-२५५
रुचकाभ्यंतरमुख्यचतुर्दिक्कूट	४-१३५
” तन्निवासिनीदेवी	४-१३६
रुचकाभ्यंतराभ्यंतर चतुर्दिक्कूट	४-१३७
” तन्निवासिनीदेवी	४-१३८
रौद्रध्यान	४-२४
लवणसमुद्रदिग्गतपाताल	४-१३४
लोकोत्तर प्रमाण	४-१९६
लोभ	४-१३
लोभ	४-१७

व्यतिरेक दृष्टान्ताभास ४-६५
ब्रह्मब्रह्मोत्तरकल्पेन्द्रक विमान ४-१२७
वचन ४-६०
वचनयोग ४-२८
वचन संस्कारके अन्तरंग प्रयत्न ४-२६१
वर्णचतुष्क ४-३४
वशार्तमरण ४-६१
वशार्तमरण ४-१८६
वज्रारकूट नाम ४-१२६
वाक्य ४-१६२
वाचिक विनय ४-२३२
वादके अंग ४-२३४
विकथा ४-५२
विकारीरस ४-६२
विग्रहगति ४-४७
विदिशा ४-६४
विदेह ४-१६५
विनय ४-६०
विपाकी ४-१६
विभावगुणपर्याय ४-१७८
विविक्तशय्यासनके प्रयोजन ४-२३१

बिल	४ १०८
वेदक सम्यक्त्व	४-२०८
वेदक सम्यग्दृष्टि	४-२५६
वेदमार्गणा	४-४६
वैक्रियककाययोगी	४-२४६
शास्त्रादरहेतु	४-२२०
शिक्षाव्रत	४—३७
,,	४-३८
,,	४-३६
शुक्लध्यान	४-२६
शुभनामकर्माश्रवमुख्यहेतु	४-१६६
स्थावर चतुष्क	४-१५६
स्वर्द्धक	४-१५४
स्पर्शान्तराय	४-७१
स्वर्गदक्षिणेन्द्रदिग्विमान	४-११२
स्वर्गोत्तरेन्द्रदिग्विमान	४-११३
सम्यक्त्वगुण	४-५८
सम्यक्त्ववर्द्धकगुण	४-१६१
सयोगिजिनके प्राण	४-६१
सर्वाघिघट दोष	४-७४
सविकल्पप्रमाण	४-१७६

संज्वलनकषाय ४-८
संधिजस्वर ४-१८०
संयोग ४-२४४
संज्ञा ४-५१
साधु ४-८४
सामान्यकेएकव्यक्तिमेंरहतेहुएअन्यमेंरहनेपरविकल्प ४-२३६
सामायिकच्छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत ४-२६५
सासादनमें व्युच्छिन्न आश्रव ४-१६१
सीतानदीके उत्तरतीरपर वक्षार ४-१२३
सीतानदीके दक्षिण तीरपर वक्षार ४-१२४
सीतोदा नदीके उत्तर तीरपर वक्षार ४-१२६
सीतोदा नदीके दक्षिण तीरपर वक्षार ४-१२५
सीमंतइन्द्रकके दिग्विल ४-१०१
सूर्यकी मुख्यदेवी ४-१११
सृष्टिकारणके विकल्प ४-२२३
सौधर्मेन्द्रविमानपार्श्वस्थनगर ४-१६८
सौधर्मलोकपालकल्पविमान ४-१२०
सौमनसवनमें भवन ४-११७
हिमक इन्द्रकके दिग्विल ४-१०६
हिंसा ४-७८
हिंसा ४-२६२

हेत्वाभास ४-६३
क्षपक शय्या ४-१८६
क्षायोपशमिक ज्ञान ४-२६
क्षीणमोहमें व्युच्छिन्न आश्रव ४-१६४
क्षेत्रविपाकी प्रकृति ४-१४६
त्रस ४-४६
ज्ञातृव्यापारके धर्मस्वभाव माननेपर विकल्प ४-१२२
ज्ञानको सर्वथा परोक्ष माननेपर प्रकाशतापर विकल्प ४-२४३
ज्ञानको ज्ञानान्तरवेद्य माननेपर भी अनवस्थाके अभावपर विकल्प ४-२४०
ज्ञानमें ज्ञानक्रियाका विरोध माननेपर विकल्प ४-२३६
ज्ञानावरणकी देशघाति प्रकृति ४-१८

पञ्चम अध्याय

अकषाय ५-१८८
अचलद्रव्य ५-८७
अचौर्यव्रतभावना ५-६१
अजीव द्रव्य ५-५२
अणुव्रत ५-१
अतिथिसंविभागव्रत ५-४२
अन्तराय ५-७
अन्तिमतीर्थंकर नाम ५-२६

अनर्थदण्डव्रतके अतिचार	५-३८
अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें बंधव्युच्छिन्न प्रकृति	५-९२
अनृद्धिप्राप्तार्य	५-५७
अनुत्तरविमान	५-४४
अनुमानाङ्ग	५-८०
अपर्याप्तत्रीन्द्रियके प्राण	५-४३
अपरिग्रहव्रत भावना	५-६३
अभव्य	५-१०
अयोगिकेवलिका काल	५-११६
अरिष्टेन्द्रक विमान	५-८८
अशुभभाव	५-१६५
अस्तिकाय	५-२७
अस्तेयाणुव्रतातिचार	५-३३
असंक्लिष्टभावना	५-१२८
अहिंसाव्रत भावना	५-५९
अहिंसाणुव्रतातिचार	५-३१
अक्षविषय	५-२५
अक्षर लिपि	५-८३
आचार	५-४
आधार	५-७०
आभिनिबोधिकज्ञान	५-२२

आराधनाके अंग	५-१३२
आश्चर्य	५-७१
आसन्नमरण	५-१४६
इन्द्रिय	५-११
इन्द्रिय विवेक	५-१२६
इन्द्रियोंके आकार	५-१२
उपक्रम	५-६४
उपसंपत	५-७२
ॐगर्भिताक्षर	५-५४
कथा	५-१७६
कवर्ग	५-११८
कल्याणक	५-५५
कालके कार्य	५-१४०
गतिमार्गणा	५-२६
गर्हित वचन	५-१३१
चमरेन्द्रकी अग्रमहिषी	५-१४२
चवर्ग	५-११६
चारित्र	५-२८
चूलिका	५-६६
ज्योतिष्कदेव	५-४५
जलकाय	५-११२

जाति	५-१४
जीवके असाधारण भाव	५-५१
जीव समास	५-१००
टवर्ग	५-१२०
तवर्गचर	५-१२१
तिथि	५-१६३
तिथिदेवता	५-१६४
तिर्यञ्च	५-१८०
दर्शनावरणपञ्चकोदयस्थानप्रकृति	५-१०२
,, ,,	५-१०३
,, ,,	५-१०४
,, ,,	५-१०५
,, ,,	५-१०६
दर्शनमोहके आश्रवके मुख्यहेतु	५-६७
दशदिशिक समुद्घात	५-१५७
दाताके आभूषण	५-७६
दिग्व्रतके अतिचार	५-३६
दुर्भावना	५-१६६
दृष्टिवादाङ्ग	५-८५
देवायुबन्धके मुख्यहेतु	५-६६
देशव्रतके अतिचार	५-३७

धारणा	५-६८
नमस्कारके पञ्चअंग	५-५३
नारकोंके मुख्य लक्षण	५-१३७
नित्यमनको प्रतिनियतात्मसंबंधी माननेपर	५-१७३
निद्रा	५-८१
निदानचिन्ता	५-८४
नोकर्म	५-१३६
प्रत्येकवनस्पतिकाय	५-११३
प्रमत्तगुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	५-९५
प्रमाण	५-१७७
प्रमाणाभास	५-१४५
,,	५-१८९
प्रायश्चित सूत्र	५-७६
प्रोषधोपवास व्रतके अतिचार	५-४०
पञ्च पैंतल्ला	५-९६
पञ्चाक्षरमंत्रवर्ण	५-१५०
,,	५-१५१
,,	५-१५२
,,	५-१५३
,,	५-१५४
,,	५-१५५

पञ्चाक्षरमंत्रवर्ण ५-१५६
पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च ५-१८२
पर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च ५-१८३
पर्याप्त तिर्यञ्च ५-१८४
पर्याप्त स्त्री ५-१८६
परमेष्ठी ५-१३
परिकर्म ५-७३
परिग्रहपरिमाणाणुव्रतके अतिचार ५-३५
पवर्ग ५-१२२
पाप ५-६
पापस्थान ५-७४
पात्र ५-६६
पूजाके अंग ५-७५
पूजाके भेद ५-८२
ब्रह्मचर्य व्रत भावना ५-६२
ब्रह्मचर्याणुव्रतके अतिचार ५-३४
ब्रह्मचारी ५-६५
ब्राह्मणत्वादि जातिके खंडक विकल्प ५-१७१
बंध ५-१५६
बंधन ५-१६
बंधहेतु ५-१५८

बाह्यतपकी बाह्यताके कारण	५-१६७
भ्रष्ट मुनि	५-१४८
भागहार	५-४८
भावप्रमाण	५-१७८
भिक्षावृत्ति	५-७७
भोगोपभोगपरिमाणव्रतके अतिचार	५-४१
मतिज्ञानके पर्यायवाची	५-१७४
मरण	५-४६
महाव्रत	५-२
मायावशार्तमरण	५-१३४
मिथ्यात्व	५-३०
मिथ्यात्वमें उदयव्युच्छिन्नप्रकृति	५-६४
मिथ्यात्वमें व्युछिन्नआश्रव	५-६८
मुनि	५-५०
मूलकरण कृति	५-१६१
मेरु	५-८६
मोहनीयपञ्चकबंधस्थानप्रकृति	५-१०१
मोहनीयपञ्चकोदयस्थानप्रकृति	५-१०७
,, ,,	५-१०८
,, ,,	५-१०६
,, ,,	५-११०

मोहनीय पञ्चकोदयस्थानप्रकृति	५-१११
योगस्थान	५-९३
योनिमती पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च	५-१८१
रस	५-१८
लब्धि	५-८
व्यवहार	५-१२९
वर्ग	५-११७
वर्ण	५-१९
बालमरण	५-१३३
बालब्रह्मचारी तीर्थंकर	५-५६
विद्याशिक्षणके आभ्यन्तरकारण	५-१७६
विद्याशिक्षणके बाह्यकारण	५-१७५
विदेह	५-९७
विनय	५-५८
विवेक	५-१२५
"	५-१६२
वैरोचनेन्द्रकी अग्रमहिषी	५-१४३
शब्दप्रवृत्ति	५-१७०
शब्दोच्चारणके आभ्यन्तर प्रयत्न	५-८६
शरीर	५-१५
शुद्धनयदृश्यभाव	५-११४

शुद्धि	५-१२३
"	५-१२४
शुद्धमिथ्यादृष्टितिर्यञ्च	५-१८७
शून	५-१६६
शेषभवनत्रासियोंकी अग्रमहिषी	५-१४४
शोकवेदनीयनोकषायाश्रवहेतु	५-१४१
स्त्री	५-१८५
स्थावर जीव	५-१४६
स्थावरोंके आकार	५-१४७
स्मृतिप्रमोषस्वरूपके खंडक विकल्प	५-१६०
स्वाध्याय	५-४६
सत्यव्रतकी भावना	५-६०
सत्याणुव्रतके अतिचार	५-३२
सम्यग्दर्शनकी लब्धि	५-२३
सम्यग्दर्शनके अतिचार	५-२१
समाधिमरणमें बाह्य शुद्धि	५-७८
समिति	५-३
सल्लेखनातिचार	५-२०
संक्रमण	५ ४७
संक्लिष्टभावना	५-१२७
संघात	५-१७

संयमके रसत्याग ५-१६८
संश्रय ५-१३५
संसार परिवर्तन ५-२४
सामायिकव्रतके अतिचार ५-३६
सीतानदी के हद ५-६०
सीताद्वदाधीश ५-१३८
सीतोदानदीके हद ५-६१
सीतोदाहदाधीश ५-१३६
सुखादिके भेद व अप्रत्यक्ष होनेपर भी आत्मीय
सिद्धिपर विकल्प ५-१७२
हस्वस्वर ५-११५
हिंसाप्रयोगक्रिया ५-१३०
ज्ञान ५-५
ज्ञानावरणकर्म ५-६

षष्ठ अध्याय

अग्निकाय ६-७६
अद्वैतब्रह्मवादीके कल्पनाके स्वरूपके विकल्प ६-११०
अनन्तानुबंधीके नोकर्म ६-५८
अनायतन ६-१८
" ६-११३
अनिवृत्तिकरणमें बंध व्युच्छिन्न प्रकृति ६-६१

अनिवृत्तिकरणमें व्युच्छिन्नआश्रव	६-६३
अपर्याप्त चतुरिन्द्रियके प्राण	६-१६
अपूर्वकरणमें व्युच्छिन्नआश्रव	६-६२
अवधिज्ञान	६-२२
अवरनक्षत्र	६-६६
अवरनक्षत्राधिदेवता	६-६७
अवसर्पिणीकालके भाग	६-२४
अविरुद्धोपलब्धिहेतु	६-३२
अशनके कारण	६-४१
अशनत्यागके कारण	६-४२
अक्षयानंत	६-४३
आनंतचतुष्केन्द्रकविमान	६-५४
आभ्यन्तरतप	६-२०
आलोचना	६-५२
आवश्यक	६-१३
आहार	६-६५
इन्द्रियनिरोध	६-२५
इन्द्रियमार्गणा	६-४
इन्द्रियाविरति	६-३
उत्सर्पिणीकालके भाग	६-२३
ऋतु	६-६४

कषाय	६-६
काय	६-१
कायाविरति	६-२
कायोत्सर्ग	६-११५
कुलाचल	६-२६
गृहस्थोंकेषट्कर्म	६-१११
" "	६-११२
गोत्र	६-७
जघन्यश्रावक	६-४४
जीव समास	६-६६
"	६-६७
"	६-६८
जीवके विशेष गुण	६-८१
जुगुप्सानोकषायाश्रवहेतु	६-६३
तिर्यञ्चायुबंधके मुख्यहेतु	६-६५
द्रव्य	६ १००
द्रव्यके सामान्यगुण	६-३६
दर्शन	६-२१
दर्शनावरणकी देशघाती प्रकृति	६-१२
दर्शनावरणके आश्रव	६-३८
दर्शनावरण की द्वितीयबंधस्थानकी प्रकृति	६-६६

दर्शनावरणषट्कसत्त्वस्थानकी प्रकृति	६-७०
दृष्टान्ताभास	६-१२७
नरकायुबन्धके मुख्यहेतु	६-६४
नो कषायषट्क	६-५
प्रत्याख्यान	६-५१
प्रतिक्रमण	६-४६
प्रमत्तविरत्तमें बंधव्युच्छिन्न प्रकृति	६-५६
प्रमाण	६-१२१
प्रमादके गुणस्थान	६-६
पद्मलेश्याके चिह्न	६-८६
पर्याप्त द्वीन्द्रियके प्राण	६-१५
पर्याप्ति	६-१४
पर्यायार्थिकनय	६-८३
पानाहार	६-८५
पुद्गलके विशेष गुण	६-८२
पूजा	६-४५
भेद	६-८६
मङ्गल	६-५०
मिथ्यात्वप्रकृति के नोकर्म	६-५७
मोहनीयषट्कदयस्थान प्रकृति	६-७१
" "	६-७२

मोहनीयषट्कोदयस्थान प्रकृति	६-७३
,, ,,	६-७४
,, ,,	६ ७५
,, ,,	६-७६
,, ,,	६·७७
,, ,,	६-७८
रतिनोकषायाश्रव	६-६२
रस ऋद्धि	६-४०
,, ,,	६-५५
रस त्याग	६-११४
रूपी अजीव	६-१०७
लेश्या	६-८
लौकिकमान	६-३१
व्यञ्जनपर्याय नैगम	६-१२०
व्युत्सर्ग	६-५३
वरनक्षत्र	६-६८
वरनक्षत्राधिदेवता	६-६६
वस्तुज्ञानरीति	६-२८
वदेना	६-४७
वायुकाय	६-८०
वाह्यतप	६-१६

विपुलमतिमनःपर्यय	६-९०
श्रवणके अन्तराय	६-२९
शब्दनय	६-११८
शास्त्रकृतिपूर्वव्याख्यातव्यवस्तु	६-८८
षट्स्थानवृद्धि	६-३३
षटस्थानहानि	६-३४
षडक्षरमंत्रवर्ण	६-१०१
,,	६-१०२
,,	६-१०३
,,	६-१०४
,,	६-१०५
,,	६-१०६
स्तुति	६-४८
स्वर्गदक्षिणेन्द्र	६-३५
स्वर्गोत्तरेन्द्र	६-३६
सन्यस्तदपकतृणमयसंस्तर योग्यता	६-८४
सम्यक् प्रकृतिके नोकर्म	६-५६
सम्यक्त्व मार्गणा	६-१७
समास	६-१०८
संवर हेतु	६-१०९
संस्थान	६-११

संहनन ६-१०
सर्वगतसामान्यके अन्तरालमें अनुपलंभके विकल्प ६-११६
सामायिक ६-४६
सावद्यकर्म ६-३०
ह्रद ६-२७
हास्यनोकषायाश्रव ६-६१
हितकाल ६-८७
ज्ञानावरणके आश्रव ६-३७
ज्ञानकी सफलता ६-११६

सप्तम अध्याय

अज्ञनेन्द्रकबिल ७-३८
अप्रियवचन ७ ६८
अनुपलब्धिहेतु ७-२५
अपर्याप्तपञ्चेन्द्रियके प्राण ७-७
असुरकुमारकी सेना ७-३६
असुरको छोड़कर शेष भवनेन्द्रोंकी सेना ७-८६
आत्म हित कारिणी ७-३७
आश्रव ७-७३
ईति ७-३४
उत्सर्पिणीमें प्रथमवृष्टियां ७-५१
ऋद्धि ७-८६

औत्सर्गिकमंत्र	७-३७
कल्पवासिसेना	७-४३
कल्पवासिदक्षिणेन्द्रसेना महत्तर	७-४४
कल्पवासिउत्तरेन्द्रसेना महत्तर	७-४५
कायमार्गणा	७-८
काययोग	७-१६
कृति	७-८५
गंधमादनकूट	७-४७
चक्रवर्तीके सजीवरत्न	७-२१
चक्रवर्तीके निर्जीवरत्न	७-२२
चक्र र्तीके राज्यके अंग	७-२३
चतुर्घंटिकनाम	७-७२
जिनागमोपासकगुण	७-८८
जीवसमास	७-५४
तत्त्व	७-२
तपऋद्धि	७-३१
दाताके गुण	७-२४
दानके स्थान	७-३२
नय	७-१७
नरकपृथ्वी	७-११
,,	७-१२

निश्चयव्यसन	७-६६
प्रतिक्रमण	७-२६
प्रमाण	७-६३
प्रलयमें वृष्टियां	७-५०
पद्मलेश्यावाले जीव	७-६२
पर्याप्तत्रीन्द्रियके प्राण	७-६
परमस्थान	७-५
पद्माभास	७-३६
पीतलेश्यावाले जीव	७-६१
भय	७-१३
भीति	७-६०
भूत व्यंतर	७-२८
भोजनके अंतराय	७-२६
भोगभूमिज सप्ताहिक कार्य	७-४८
महेन्द्र कल्पेन्द्रक विमान	७-४२
मिथ्यात्व	७-८७
मोहनीयसप्तकोदयस्थान प्रकृति	७-५५
,,	७-५६
,,	७-५७
,,	७-५८
,,	७-५६

मोहनीयसप्तकोदयस्थान प्रकृति	७-६०
,,	७ ६१
,,	७-६२
,,	७-६३
,,	७-६४
मौनके अवसर	७-२०
राक्षसव्यंतर	७-३३
लेश्यामार्गणा	७-१०
व्यन्तरेन्द्रकी सेना	७-४०
व्यन्तरेन्द्रसेनाप्रधान	७-४१
व्यसन	७-४
विजयार्धभावीरत्न	७-४६
विपर्ययनिरासके खंडक विकल्प	७-८४
शब्दस्वर	७-५२
शील	७-१
शुक्ललेश्याके चिन्ह	७-७०
शुभोपयोग	७-६६
स्पर्शके अन्तराय	७-२७
सप्तभङ्ग	७-१४
सप्ताक्षरमंत्र वर्ण	७-७४
,,	७-७५

सप्ताक्षरमंत्र कर्ण	७-७६
"	७-७७
"	७-७८
"	७-७६
"	७-८०
"	७-८१
"	७-८२
सप्ताक्षर विद्यामंत्र	७-८३
सम्यग्दर्शन प्रतिपत्ति	७-३
समुद्घात	७-१४
सयोगकेवलियोंमें व्युच्छिन्न आश्रव	७-५३
संयम मार्गणा	७-६
संसक्त लक्षण	७-७१
साधुव्यञ्जक	७-१६
सामायिक शुद्धि	७-३५
सौमनस कूट	७-४६
हरितप्रत्येक वनस्पति	७-६५
क्षपकशिलासंस्तर योग्यता	७-६७
क्षेत्र	७-१६
अष्टम अध्याय	
अकालमृत्युहेतु	८-३२

अधर्मद्रव्यके सामान्यगुण	८-६५
अन्तमार्गणा	८-२३
अनुभयवचन	८-२४
अनुयोगद्वार	८-१२५
अप्रतिष्ठित शरीर	८-२८
अपहृतसंयम शुद्धि	८ ३८
अनैकान्तिक हेत्वाभास	८-१२१
अष्टप्रवचनमातृका	८-१२३
अष्टाक्षरमंत्रवर्ण	८-१०७
,,	८-१०८
,,	८-१०९
,,	८-११०
,,	८-१११
,,	८-११२
,,	८-११३
,,	८-११४
अशनशुद्धि	८-३०
असत्सत्ताकासिद्धहेत्वाभास	८-११८
आकाशद्रव्यके सामान्यगुण	८-६६
आगन्तुक मुनि परीक्षा	८-१०२
आचार्यकेगुण	८-१८

आर्यविद्याधर	८-२५
उच्चगोत्रके मुख्य आश्रव	८-७६
उदयव्युच्छित्तिपश्चाद्ध्रुवव्युच्छिन्नप्रकृति	८-७३
उपमाप्रमाण	८-४८
उपशमसम्यग्दृष्टि	८-१२६
ऋद्धि	८-३५
ऋद्धिप्राप्तार्य	८-३६
औषधिऋद्धि	८-३१
,,	८-७०
कर्म	८-२
कर्मबन्ध	८-३
कर्म प्रकृतियोंके दृष्टान्त	८-७१
कर्मस्थिति रचनामें ज्ञेय राशि	८-७८
कायके अङ्ग	८-२०
कार्माणपुद्गलद्रव्य	८-७४
कालद्रव्यके सामान्यगुण	८-९७
गंधर्वविद्या	८-४२
चारणऋद्धि	८-११५
चिकित्सा	८-१०१
ज्योतिष्कदेव पद	८-४५
जीवसमास	८-७९

जीव समास	८-८०
जीव सामान्यगुण	८-९२
द्रव्यपर्यायनैगम	८-१२२
दिग्गज	८-५२
देशसंयतमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	८-७२
दैत्यविद्या	९-४३
ध्यानके अङ्ग	८-१०६
धर्मद्रव्यके सामान्यगुण	८-९४
नन्दनवनके कूट	८-५०
नन्दनवनकूट शिखरस्थदिक्कन्या	८-५१
नामकर्मके बन्धस्थान	८-७५
नीच गोत्रके मुख्याश्रव	८-७७
प्रातिहार्य	८-१९
पृथ्वी	८-११
प्रवचनमातृका	८-१२
पर्याप्तचतुरिन्द्रियके प्राण	८-७
परात्मवादी	८-९८
पुद्गलके उपग्रह	८-४९
पुद्गलके सामान्यगुण	८-९३
पूजाके द्रव्य	८-२१
भाव प्राण	८ ३७

मङ्गलद्रव्य	८-६६
मतिज्ञानके विषय	८-१२४
मद	८-१४
महानिमित्त	८-२७
महारोग	८-११७
महाहिमवान्पर कूट	८-६६
मातङ्गविद्याधर	८-२६
मानवशार्तमरण	८-१०५
मुनिके द्वारा कही गई कथा	८-१०४
मेरुमध्यगत प्रदेश	८-११६
मोहनीयकी अष्टकोदयस्थान प्रकृति	८-८१
,,	८-८२
,,	८-८३
,,	८-८४
,,	८-८५
,,	८-८६
,,	८-८७
,,	८-८८
,,	८-८६
,,	८-६०
,,	८-६१

रुक्मिकुलाचलपरकूट	८-६०
रुचकगिरिपूर्वदिक्स्थकूट	८-६१
रुचकगिरिपूर्वदिक्स्थकूटकी निवासिनीदेवी	८-६२
रुचकगिरिदक्षिणदिक्स्थकूट	८-६३
" निवासिनीदेवी	८-६४
रुचकगिरिपश्चिमदिक्स्थकूट	८-६५
" निवासिनीदेवी	८-६६
रुचकगिरिकेउत्तरदिकस्थकूट	८-६७
" निवासिनीदेवी	८-६८
लौकान्तिक देव	८-६
लौकिक शुद्धि	८-२६
व्यन्तर	८-१०
व्यन्तरदक्षिणेन्द्र	८-३३
व्यन्तरउत्तरेन्द्र	८-३४
व्यन्तरदेवपद	८-४४
व्यन्तरचैत्यवृक्ष	८-४६
व्यन्तरेन्द्रनगराश्रयद्वीप	८-४७
वचनसंस्कारस्थान	८-१२७
विरुद्धहेत्वाभास	८-१२०
श्रावकके द्वारा कही गई कथा	८-१०३
श्रावक के मुख्यगुण	८-४

श्रावकके मुख्यगुण	८-५
"	८-६
शब्दोच्चारणस्थान	८-४१
स्पर्श	८-१७
स्पर्श के अन्तराय	८-१००
स्वर्गेंद्र जिणेन्द्रकी अग्रदेवी	८-३६
स्वर्गोत्तरेन्द्रकी अग्रदेवी	८-४०
सम्यक्त्वपोषकगुण	८-११६
सम्यग्दर्शनके अंग	८-१३
सम्यग्दर्शनके दोष	८-१५
सम्यग्दृष्टिके बाह्यगुण	८-१२
सम्यज्ञानके अङ्ग	८-६६
सिद्धके मुख्यगुण	८-१
सीता नील मध्यस्थ विदेहदेश	८-५३
" " " की राजधानी	८-५४
सीतानिषधमध्यस्थविदेहदेश	८-५५
" की राजधानी	८-५६
सीतोदानीलमध्यस्थविदेहदेश	८-५७
" की राजधानी	८-५८
ज्ञान	८-१६
ज्ञानमार्गणा	८-८

नवम अध्याय

अग्निकुमारकी सेना	९-६९
अनंत	९-३२
अनादिवैस्रसिकबंध	९-३४
अनुदिशविमान	९-७०
अनुभयवचन	९-८२
अविरतसम्यक्त्वमें व्युच्छिन्नआश्रव	९-४७
अशुभोपयोग	९-६२
असंख्यात	९-३१
आगमद्रव्यकृतिके अधिकार	९-८०
उदधिकुमारकी सेना	९-७२
उपशान्तमोहमें आश्रव	९-६४
ऐरावतस्थविजयार्धपर कूट	९-३८
कायिकविनय	९-८४
गैवेयकेन्द्रयविमान	९-२
चक्रवर्तीकी निधि	९-२४
जीवसमास	९-४८
"	९-४९
द्वीपकुमारकी सेना	९-७३
दर्शनावरणकी प्रकृति	९-३
दर्शनावरणकी प्रथमबंधस्थानमें प्रकृति	९-४

दर्शनावरणकी नवकसत्वस्थानप्रकृति	६-५
दिक्कुमारकी सेना	६-७४
देवता	६-१३
नय	६-६०
नवकोटी	६-१६
नवनिधिके कार्य	६-४१
नवाक्षर मंत्र वर्ण	६-७५
"	६-७६
"	६-७७
"	६-७८
नामकुमारकी सेना	६-६६
नामकर्मनवप्रकृतिकसत्त्वस्थानप्रकृति	६-५६
नारद	६-२३
नारायण	६-२१
निषधपर कूट	६-३५
नीलपर्वतपर कूट	६-३६
नैगमनय	६-८८
नोकषाय	६-७
नोकषायवशार्तमरण	६-८
प्रतिनारायण	६-२२
प्रसिद्धग्रह	६-२८

प्रायश्चित	६-१५
पदार्थ	६-१
पर्याप्तअसंज्ञीपञ्चेन्द्रियके प्राण	६-११
पक्षाभासजअनुमानाभास	६-८६
पात्रदानकेअवसरपर भक्ति	६-२६
पूजाके सर्वद्रव्य	६-१६
भविष्यउत्सर्पिणीकालके नारक	६-८३
भरतस्थविजयार्धपरकूट	६-३८
भावीउत्सर्पिणीमें बलदेव	६-४२
" " नारायण	६-४३
" " प्रतिनारायण	६-४४
माल्यवानगजदंतपर कूट	६-३६
मिथ्यादृष्टि	६ ८७
मेघापृथ्वीमें इन्द्रकबिल	६-३३
मोहनीयके उदयस्थान	६४६
मोहनीयनवबन्धस्थानप्रकृति	६-५०
"	६-५१
"	६-५२
"	६-५३
"	६-५४
"	६-५५

मोहनीयनवबन्धस्थानप्रकृति	६-५६
,,	६-५७
,,	६-५८
योनि	६-१२
व्यन्तरोंके चैत्यवृक्ष	६-८५
बलभद्र	६-२०
वस्तुधर्म	६-८६
वातकुमारकी सेना	६-७०
बादरकषायके गुणस्थान	६-१४
विकलत्रयके जीवसमास	६-१०
विद्युत्कुमारकी सेना	६-६७
विद्युत्प्रभगजदंतपर कूट	६-४०
शस्त्रवशीकरणशस्त्रनिष्फलीकरणमंत्र	६-७६
शीलकीबाढ़	६-२७
स्तनितकुमारकी सेना	६-७१
स्वच्छन्दके लक्षण	६-६३
सजात्यसद्भूतव्यवहार	६-२६
सजातिविजात्यसद्भूतव्यवहार	६-३०
सासादनमें उदयव्युच्छिन्नप्रकृति	६-४५
सुपर्णकुमारकी सेना	६-६८
सेनाके भेद	६-२५

क्षपककाष्ठपट्टसंस्तरयोग्यता	६-६१
क्षायिकभाव	६-६
क्षीणमोहमें आश्रव	६-६५
त्रसनवक	६-६
ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्यकृति	६-८१

दशम अध्याय

अब्रह्म	१०-२४
अर्थग्राहकाहंप्रत्ययदूषणार्थपरविकल्प	१०-७६
अविरतसम्यक्त्वमेंबंधव्युच्छिन्नप्रकृति	१०-४३
अशनदोष	१०-२५
असत्यवचन	१०-२२
असंख्यातगुणनिजरामय	१०-१२
आर्तरौद्रध्यानसहितवशार्तमरण	१०-६१
आलोचनाके दोष	१०-२०
उपवास	१०-७१
उपासकाध्ययनके अधिकारवस्तु	१०-१६
औधिकसमाचार	१०-२८
क्रियाऋद्धि	१०-४२
करण (कर्मावस्था)	१०-१७
कल्पवृक्ष	१०-६
कामके वेग	१०-५७

किंनर	१०-३८
किंपुरुष	१०-३९
कुशीलमुनि	१०-६०
कृष्णलेश्याके लक्षण	१०-५९
केवलज्ञानके अतिशय	१०-११
गंधर्वव्यन्तर	१०-४१
चक्रवर्तीके भोग	१०-१८
जन्मके अतिशय	१०-१०
जीवसमास	१०-४७
"	१०-४८
द्रव्यके विशेषस्वभाव	१०-३५
द्रव्यप्राण	१०-५
द्रव्यके सामान्यगुण	१०-५१
द्रव्यार्थिकनय	१०-५२
द्विजके अधिकार	१०-७४
दर्शनार्थ	१०-३
दर्शनके अन्तराय	१०-५३
दशमुण्ड	१०-३०
दशाक्षर मंत्रवर्ण	१०-७०
देवपद	१०-१५
धर्म	१०-१

धर्मध्यान	१०-८
नपुंसकवेदनोकषायाश्रव	१०-६८
नाम	१०-७८
नामकर्मदशकसत्त्वस्थानप्रकृति	१०-५०
नारकयोनि	१०-७७
प्रत्याख्यान	१०-२३
पर्याप्तसंज्ञीके प्राण	१०-६
पुद्गलके पर्याय	१०-६५
पुंवेदनोकषायाश्रव	१०-६७
बाह्यतपके फल	१०-७५
भवनवासी	१०-१४
भवनवासीके चैतन्यवृक्ष	१०-३७
भवनवासीदक्षिणेन्द्र	१०-२६
भवनवासीउत्तरेन्द्र	१०-२७
भवनवासीके मुकुटचिन्ह	१०-३६
भेदभंगप्रक्रियोपयोगी	१०-३४
मनःपर्ययज्ञानी	१०-७६
महानिन्द्यभाषण	१०-५६
महोरगव्यन्तर	१०-४०
मैथुनदोष	१०-२६
मोहनीयके बंधस्थान	१०-४६

मोहनीयदशकोदयस्थानप्रकृति	१०-४६
वर्द्धमानतीर्थंकरके समय अन्तःकृतकेवली	१०-६३
" " औपपादिक	१०-६४
वाह्यपरिग्रह	१०-१३
वैयावृत्य	१५-७
श्रमणकल्प	१०-३२
शुक्ललेश्याके चिन्ह	१०-५८
स्थावरदशक	१० ४४
स्त्रीवेदनोकषायाश्रव	१०-६६
सकषायके गुणस्थान	१०-४
सत्यवचन	१०-२१
सद्भावस्थाप्यकर्म	१०-७३
सन्यासावसरमें आचार्यका स्वसंघमें निवासके दोष	१०-५४
सम्यक्त्व	१०-२
सम्यक्त्वविनयस्थान	१०-६२
सम्यग्दृष्टि	१०-८०
समानसंज्ञकवर्ण	१०-३१
सर्वदिशा	१०-१६
संततिश्रीसौभाग्यादिविधायीऋद्धिमंत्र	१०-७२
संयोगीशरीर	१०-३३
सूक्ष्मसाम्परायमें आश्रव	१०-५६

क्षपकभूमिशय्यायोग्यता	१०-५५
त्रसदशक	१०-४५
अग्निबाधावारकऋद्धिमंत्र	११-३७
अग्निभयवारक	११-४५
अधःकरणरचनाज्ञेयराशि	११-१६
अनन्त	११-२६
अहमिन्द्र	११-५०
एकादशाक्षरवर्ण वाले मंत्र	११-२४
,, ,,	११-२५
करण (ज्योतिषविषयक)	११-२३
कल्पातीतेन्द्रकविमान	११-१७
गजमदनिवारणऋद्धिमंत्र	११-३१
चोरभयनिवारणऋद्धिमंत्र	११-३२
जिनेन्द्रमें ११परिषह	११-३
जीवसमास	११-१८
तिर्यंगेकादश	११-६
द्रव्यके सामान्यस्वभाव	११ ५
दुःखितनेत्रदुःखवारकऋद्धिमंत्र	११-४१
धनलाभनिमित्त	११-४३
नीललेश्याके चिन्ह	११-२०
तबाधावारक ऋद्धिमंत्र	११-३५

षट मंडपके स्थान	११-७
परमन्त्रनिवारणादिनिमित्तऋद्धिमंत्र	११-३४
परोदयव्यमानप्रकृति	११-१५
पापसूत्र	११-२२
पार्श्वस्थमुनिचिन्ह	११-२१
बन्दिग्रहमुक्तिराजभयवारक	११-४८
मनोवाञ्छितसिद्धिनिमित्त ऋद्धिमंत्र	११-४६
मोहनीयदशमसत्त्वस्थान प्रकृति	११-१६
युद्धभयवारण मंत्र	११-४७
रुद्र	११-४
व्यवसायलाभादिनिमित्तऋद्धिमंत्र	११-४०
वंशा पृथ्वीमें इन्द्रकबिल	११-१२
विक्रिया ऋद्धि	११-८
वियुक्त योजक ऋद्धिमंत्र	११-२८
श्रावककी प्रतिमा	११-२
श्वानविषनिवारकऋद्धिमंत्र	११-३०
शत्रु व शिरपीड़ा निवारक ऋद्धिमंत्र	११-२७
शत्रु आराधनासे हानिका वारक	११-३६
शत्रुस्तंभितनिमित्त	११-४२
शिखरी पर्वतपर कूट	११ १४
शिर पीडा वारक ऋद्धिमंत्र	११ ३६

सभाविजयसौभाग्यनिमित्तक ऋद्धिमंत्र	११-३३
समवसरणभूमि	११-१
सर्पभयवारकमंत्र	११-४४
सर्पविषदूरीकरणऋद्धिमंत्र	११-४६
सर्पविषनिवारकव सर्पकीलकऋद्धिमंत्र	११-२६
सर्पशिरोरोगवारकऋद्धिमंत्र	११-३८
सिद्धविशेषकज्ञानप्रकार	११-११
हिमवान पर्वत पर कूट	११-१३
हेत्वाभास	११-१०
क्षेत्रमापप्रकार	११-६
अक्रियावादी	१२-१५
अंग	१२-६
अयोगिगुणस्थानमेंबंधव्युच्छिन्नप्रकृति	१२-१६
अयोगकेवलीमें उदययोग्यप्रकृति	१२-३१
अविरति	१२-७
आह्वानेच्छापूरक	१२-३७
उपयोग	१२-१०
कर्मभूमिजपञ्चेन्द्रियके जीवसमास	१२-१६
कल्पेन्द्र	१२-५
चक्रवर्ती	१२ २
चारित्रमोहनीयकी सर्वघाति	१२-६

जंबूसमास	१२-२२
जीवसमास	१२-२३
,,	१२-२४
तन्त्रनिमित्तक ऋद्धिमंत्र	१२-३९
तपके अतिचार	१२-४६
द्वादशाक्षर मंत्रवर्ण	१२-३२
,,	१२-३३
,,	१२-३४
द्वेष प्रकृति	१२-४३
प्रसिद्धमहापुरुष	१२-८
पिशाचादि भयवारक	१२-४०
भयनिवारक राजधननिमित्तक ऋद्धिमंत्र	१२-४१
भावना	१२-४
भावी उत्सर्पिणीमें चक्रवर्ती	१२-१८
भोगभूमिज पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च जीवसमास	१२-२६
मत्स्यपाशदूरीकरण ऋद्धिमंत्र	१२-३६
मतिज्ञानके विषय	१२-११
मोहनीयनवमोदय सत्वस्थान प्रकृति	१२-२५
यक्ष	१२-१७
राशि	१२-२१
व्यंतर विशेष	१२-१२

वक्ताके गुण	१२—२८
वचन	१२-१३
श्रावक के व्रत	१२-१
शत्रुव्याधिभयनिवारकादिनिमित्त ऋद्धिमंत्र	१२-३८
स्थाप्यकर्म	१२-३५
स्वभावपर्याय	१२-२७
संवराधिकारी श्रावक	१२-४४
सन्यस्तार्थ ४८ मुनियोंके कार्य	१२-३०
सभाभूमि	१२-१४
सम्यक्त्वके अभावका जहां नियम है	१२-४५
समुद्रभयवारक ऋद्धिमंत्र	१२-४२
सावद्यवचन	१२-२६
अनन्तानुबन्धी कषाय	१३-३१
अप्रत्याख्यानावरणीय	१३-३२
अयोगिमिचरप्रसमयमें सत्त्वव्युच्छिन्न प्रकृति	१३-४
अयोगकेवलीमें भाव	१३-१५
उद्वेलन प्रकृति	१३-५
एकान्तमत	१३ ७
गर्भस्तंभनगर्भापतननिमित्तमन्त्र	१३-२४
चारित्रके अङ्ग	१३-१३
जीव समास	१३-८

तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यकृति	१३-२७
तेरह अक्षर वाले मन्त्र	१३-१६
,,	१३-१७
,,	१३-१८
,,	१३-१९
,,	१३-२०
दुर्जनवशीकरण जिह्वास्तंभननिमित्त मन्त्र	१३ २७
दुर्भिक्षादिभयवारकमन्त्र	१३-२५
धम्मापृथ्वीमें इन्द्रकबिल	१३-३
नामकर्मके सत्वस्थान	१३-६
निर्यापकके गुण	१३-१४
प्रत्याख्यानावरणीय	१३-३३
प्रतिवादीशत्रुभयकारकमन्त्र	१३-२२
मनुष्यजीवसमास	१३-१२
मोहनीय की देशघाती प्रकृति	१३-२
मोहनीयचतुर्थबंधस्थानप्रकृति	१३-९
,,	१३-१०
मोहनीय अष्टमसत्त्वस्थानप्रकृति	१३-११
रागप्रकृति	१३-२९
विद्यामंत्र	१३-२१
विषमज्वरवारकमंत्र	१३-२३

श्रावक	१३-३०
संज्वलन	१३-३४
सम्पत्ति लाभ निमित्तक मंत्र	१३-२६
साधुचरित्र	१३-१
अङ्गबाह्यश्रुत	१४-१५
अध्यात्मैकान्त	१४-२४
अवसन्नमुनिके चिह्न	१४-२५
आग्रायणीपूर्वके अधिकारवस्तु	१४-११
आभ्यंतर परिग्रह	१४-६
कुलकर	१४-३
कुलकरकार्य	१४-२७
गृहस्थके लक्षण	१४-१३
गुणस्थान	१४-१
चक्रवर्तीके रत्न	१४-५
चतुर्दशाक्षरमन्त्र	१४-२६
,,	१४-३०
जीवसमास	१४-२
,,	१४-२१
,,	१४-२२
देवकृत अतिशय	१४-१०
नामकर्मकी पिण्डप्रकृति	१४-१८

परमंत्रमरणादिनिमित्तकमंत्र	१४-३२
पिशाच	१४-२०
पूर्व	१४-४
भयरोगोपसर्गवारकप्रतापकारक ऋद्धिमंत्र	१४-३३
भोगभूमिजमद्विशाके आभरण	१४-२६
भोजन मल	१४-१६
महानदी	१४-१४
मार्गणा	१४-६
मोहनीयदेशघातीप्रकृति	१४-७
मोहनीयसर्वघातीप्रकृति	१४-८
विद्या	१४-१७
श्रोता	१४-१२
स्वर्गवासियोंके मुकुट चिह्न	१४-१६
सयोगकेवलीमें भाव	१४-२८
सर्वोपद्रवनाशक मन्त्र	१४-३१
ज्ञानमात्रात्मनिस्याद्विसद्धमुख्यधर्म	१४-२३
उदररोगवारक ऋद्धिमन्त्र	१५-१८
कपोत लेश्याके चिन्ह	१५-१६
कर्म भूमि	१५-११
कालके स्वभाव	१५-१२
खरकर्म	१५-४

जीवसमास	१५-६
"	१५-१०
दिनके मुहूर्त	१५-२४
देशसंयत गुणस्थानमें व्युच्छिन्नआश्रव	१५-८
प्रमाद	१५-१
पञ्चदशाक्षरमन्त्र	१४-१७
मध्यम नक्षत्र	१५-५
मध्यमनक्षत्राधिदेवता	१५-६
मोहनीयसत्त्वस्थानप्रकृति	१५-७
योग	१५-२
राजमान्यतानिमित्तक ऋद्धिमंत्र	१५-२०
रात्रिके मुहूर्त	१५-२५
श्रवणके अन्तराय	१५-१३
शत्रुवशीकरण शस्त्रनिष्फलीकरण मंत्र	१५-२२
शत्रुस्तंभननिमित्तक ऋद्धि मंत्र	१५-१६
संग्रहिणी आदि पीडानिवारक ऋद्धिमंत्र	१५-२१
सम्यग्दृष्टिके उत्तरगुण	१५-३
संयुक्त शरीर	१५-२३
हिंसा प्रयोगक्रिया	१५-१५
क्षपक योग्य वसतिका	१५-१४
अग्निभयनिवारक मंत्र	१६-३३

अधर्मद्रव्यके स्वभाव	१६-२१
अनिवृत्तिकरणगुणस्थानमें आश्रव	१६-३०
आकाशद्रव्यके स्वभाव	१६-२२
उत्पादन दोष	१६-३
उद्गमदोष	१६-२
क्रिया	१६-२८
कल्पोपपन्न	१६-५
कषाय	१६-६
कुण्डलगिरिपरकूट	१६-२६
कुण्डलगिरि कूटाधीशदेव	१६-२७
खर पृथ्वीके भाग	१६-१०
चन्द्रगुप्तके स्वप्न	१६-३५
जीवसमास	१६-१८
,,	१६-१६
तीर्थंकरत्वभावना	१६-१
तीर्थंकरकी माताके स्वप्न	१६-८
द्रव्यके विशेष गुण	१६-२३
धर्मद्रव्यके स्वभाव	१६ २०
नन्दनवनवापिका	१६-११
प्रसिद्ध सती	१६-७
भरत चक्रवर्तीके स्वप्न	१६-३४

भावी उत्सर्पिणीमें कुलकर	१६-१२
भोगभूमिजमनुष्योंका आभरण	१६-२६
मत्स्यपाशदूरीकरण मंत्र	१६-३२
मिथ्यात्वगुणस्थानमें बंधव्युच्छिन्नप्रकृति	१६-१३
योगमार्गणा	१६-१७
लौकान्तिकदेव	१६-८
व्यन्तर देवोंके इन्द्र	१६-३७
वैयावृत्यगुण	१६ २५
स्वर्ग	१६-४
स्वर	१६-२४
संस्कार	१६-३६
सूक्ष्म साम्परायमें बंधव्युच्छिन्नप्रकृति	१६-१४
सोलह अक्षर वाला मंत्र	१६-३१
हिंसा	१६-३८
क्षीणमोहमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	१६-१५
क्षीणमोहमें सत्त्वव्युच्छिन्न प्रकृति	१६—१६
अविरतसम्यक्त्वमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	१७—३
कषायवेदनीयाश्रव हेतु	१७-८
जीव समास	१७-४
पञ्चेन्द्रियके गुणस्थान	१७-११
भव्यके गुणस्थान	१७-१२

मनुष्यके गुणस्थान	१७-१०
मरण	१७-७
मोहनीयसप्तदशकबंधस्थान प्रकृति	१७-५
" "	१७-६
श्रावक के नित्यनियम	१७-२
संयम	१७-१
सूक्ष्मसाम्परायमें बंधयोग्य प्रकृति	१७-६
अशकुन	१८-१७
जीवसमास	१८-८
"	१८-६
"	१८-१०
दलश्रेणि	१८-७
दृष्टान्ताभास	१८-१८
दोष	१८-५
निषीधिका लक्षण	१८-१२
पञ्चेन्द्रियतिर्यग्जीव समास	१८-४
पाप	१८-६
लिपि	१८-१३
"	१८-१४
"	१८-१५
लेश्याके अंश	१८-११

व्याधिशत्रुभयनिवारण श्रीआपक मंत्र	१८-१६
बुद्धि ऋद्धि	१८-३
वेदनीयाश्रव हेतु	१८-१
क्षायोपशमिक भाव	१८-२
गर्भस्तंभतगर्भापतन निमित्तमंत्र	१६-४
जीव समास	१६-१
जीवके ज्ञायक	१६-५
दर्शनावरणाश्रवहेतु	१६-२
सर्वअरिष्ट अंगपीडावारक ऋद्धिमंत्र	१६-३
कफकोपजन्य व्याधि	२०८
कुण्डलगिरिपर कूट	२०-३
जीवप्ररूपणा मुख्यस्थान	२०-६
जीव समास	२०-७
पुण्यपापोभयप्रकृति	२०-११
भवनवासियोंके इन्द्र	२०-१४
मनकी शुद्धिके कारण	२०-१३
विदेहविद्यमान तीर्थंकर	२०-६
श्रावकके उत्तमगुण	२०-२
श्रुतज्ञान	२०-१
समवसरणरचनावस्तु	२०—४
समवशरणरचना भाग	२०-५

संतति श्रीसौभाग्यविजयबुद्धिलाभका मंत्र	२०-१२
क्षीणमोहमें भाव	२०-१०
उपशान्त मोहमें भाव	२१-९
औदयिकभाव	२१-२
चारित्रमोह क्षपणाके अवसरमें करण	२१-१३
जीवसमास	२१-३
निग्रहस्थानके भेद	२१-१२
मोहनीयकीएकविंशतिबंधस्थानकी प्रकृति	२१-४
,,	२१-५
,,	२१-६
,,	२१-७
मोहनीयसप्तमसत्कस्थानप्रकृति	२१-८
बंदिग्रहमुक्तिराजमयवारकमंत्र	२१-११
सर्वघाती प्रकृति	२१-१
संग्रहिणी आदि निवारकमंत्र	२१-१०
अनिवृत्तिकरणमें बंधयोग्य प्रकृति	२१-११
अप्रमत्तविरतमें आश्रव	२२-१२
अपूर्वकरणमें आश्रव	२२-१३
आह्वनीयेच्छापूरकमंत्र	२२-१७
जीवसमास	२२-२
परीषहजय	२२-१०

बाईस अक्षरका मंत्र	२२-१३
" " का विद्यामंत्र	२२-१६
मोहनीयद्वाविंशतिबन्धस्थान प्रकृति	२२-३
"	२२-४
"	२२-५
"	२२-६
"	२२-७
"	२२-८
मोहनीयषष्ठसत्त्वस्थान प्रकृति	२२-९
स्कंधवर्गणा	२२-१
सूक्ष्मसाम्परायमें भाव	२२-१४
कल्पातीत	२२-३
तेवीस अक्षर वाला मंत्र	२३-४
मोहनीयपन्चसत्वस्थान प्रकृति	२३-२
वर्गणा	२३-१
विषमज्वरवारक मंत्र	२३-५
अग्रायणी पूर्वके चयन लब्धिके कर्मप्रकृतिप्राभृतके अर्थाधिकार	२४-१८
उत्तरप्रकृति स्थितिबंधके अनुयोग द्वार	२४-२१
एकैकोत्तर प्रकृतिबंधके अनुयोगद्वार	२४-२०
कामदेव	२४-१०

गतचतुर्थकालमें तीर्थङ्कर २४-१
" " के चिन्ह २४-२
" " " पिता २४-३
" " " माता २४-४
" " " पूर्व तृतीय भवनाम २४-५
" " " पूर्व तृतीय भव पिताके नाम २४-६
" " पूर्ववास स्वर्गविमान २४-७
" " समीपस्थ यक्ष २४-८
" " की माताके समीप रहने वाली यक्षिणी २४-९
चौबीस अक्षरका ऋद्धि मंत्र २४-१७
जातिके दूषणाभास २४-१८
जीवसमास २४-१४
प्रमत्तविरतमें आश्रव २४-१६
भावी उत्सर्पिणीमें तीर्थङ्कर २४-११
भावी उत्सर्पिणीमें तीर्थङ्करोंके पूर्व तृतीय भवनाम २४-१२
भूतोत्सर्पिणीमें तीर्थङ्कर २४-१३
मोहनीयचतुर्थसत्त्वस्थान प्रकृति २४-१५
आश्रवक्रिया २५-४
उच्चैर्गोत्राश्रवहेतु २५-९
उपाध्यायके सर्वगुण २५-१०
कषाय २५-२

चारित्रमोहनीयप्रकृति २५-१
नीचैर्गोत्राश्रवहेतु २५-८
पच्चीस अक्षर वाला मंत्र २५-११
वर्गाक्षर २५-५
विकथा २५-१२
सम्यक्त्वदोष २५-६
सासादनमें बंधव्युच्छिन्न प्रकृति २५-३
ज्ञानावरणाश्रवहेतु २५-७
कषाय मार्गणा २६-२
गजमदवारण निमित्तयंत्र २६-८
जीवसमास २६-३
देशघाती प्रकृति २६-१
मनुष्यायुराश्रवहेतु २६-५
मोहनीय तृतीय सत्त्वस्थान प्रकृति २६-४
शत्रुस्तंभन निमित्त मंत्र २६-९
सर्वशिरोरोग वारण निमित्त मंत्र २६-१०
संस्कार २६-७
सान्निपातिक भाव २६-६
इन्द्रिय विषय २७-१
चौरभयनिवारणनिमित्त मंत्र २७-८
जीवसमास २७-५

नक्षत्र	२७-३
मोहनीय द्वितीय सत्त्वस्थान प्रकृति	२७-६
योग (ज्योतिषसम्बन्धी)	२७-४
स्वोदयबध्यमान प्रकृति	२७-२
सप्तविंशत्यक्षरमंत्र	२७-७
अनिवृत्तिकरणमें भाव	२८-८
अपूर्वकरणमें भाव	२८-७
जीवसमास	२८-३
नक्षत्र	२८-५
नामकर्मकी अपिण्ड प्रकृति	२८-१
प्रेतबाधावारण निमित्त मंत्र	२८-९
मोहनीय कर्मकी प्रकृति	२८-२
मोहनीय प्रथम सत्त्वस्थान प्रकृति	२८-४
शत्रुस्तंभन निमित्त मंत्र	२८-१०
साधुके मूलगुण	२८-६
सुषिर जातिके प्रसिद्ध बाजे जो तीर्थंङ्करके जन्मोत्सवमें वों द्वारा बजाये जाते हैं	२८-११
तिर्यगायुराश्रवहेतु	२९-२
[illegible] बजाये जाने वाले बाजे जो तीर्थंङ्करके जन्मोत्सवपर बजाये गये	२९-३
रत्नत्रयके अंग	२९-१

कर्मभूमिजतिर्यञ्चकेजीवसमास	३०-५
जीवसमास	३०-२
"	३०-३
सयोगकेवलीमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृति	३०-१
सुभोग भूमि	३०-४
अप्रमत्तविरतमें भाव	३१-५
एकत्रिंशदक्षर मत्र	३१-६
देशसंयतमेंभाव	३१-३
प्रमतविरतमें भाव	३१-४
युगपद्वंधोदयव्युच्छिन्न प्रकृति	३१-१
राज्यवाग्विजय सौभाग्यनिमित्त मंत्र	३१-७
शुभस्वप्न	३१-८
सौधर्म युग्मकल्पेन्द्रक विमान	३१-२
कायोत्सर्ग दोष	३२-६
जीवसमास	३२-३
निरंतरवध्यमान प्रकृति	३२-२
भोजनांतराय	३२ ४
व्यवहारमें आये हुए शिल्पीकार	३२-१०
वंदनादोष	३२-५
विद्यामंत्र	३२-९
सम्यङ्मिथ्यात्वमें भाव	३२-८

सासादनमें भाव	३२-७
सान्तरबध्यमान प्रकृति	३२-१
जीवसमास	३३-१
तंत्रनिमित्त मंत्र	३३-४
नरकायुराश्रवहेतु	३३-२
सर्पविषवारण तत्कीलनानिमित्त मंत्रवर्ण	३३-३
जीव समास	३४-२
बंधापसरणस्थान	३४-३
मिथ्यात्वमें भाव	३४-४
सान्तरबंधिनी प्रकृति	३४-१
णमोकार मंत्रके अक्षर	३५-१
पिशाचदिवारणनिमित्त मंत्र वर्ण	३५-२
भयरोगोपसर्गनिवारण निमित्त मंत्रवर्ण	३५-३
अनिवृत्तिकरणमें सत्त्वव्युच्छिन्न प्रकृति	३६-१
अविरत सम्यक्त्वमें भाव	३६-७
आचार्यके मूलगुण	३६-५
आचार्यके गुण	२६-८
,,	३६-९
,,	३६-१०
जीवसमास	३६-२
जीवसमास	३६-३

निगोदके कारण	३६-१२
पृथ्वीकाय	३६-४
राग जो इन्द्रने तीर्थंकरके जन्मपर गाये	३६-११
सन्निपातिक भाव	३६-६
अशुभनामकगर्भाश्रव हेतु	३७-१
देशसंयतगुणस्थानमें आश्रव	३७-२
शत्रुआराधनहानिवारण निमित्त मंत्रवर्ण	३७-३
जीवसमास	३८-१
दुर्जनवशीकरणजिह्वस्तम्भननिमित्त मंत्राक्षर	३८-३
सर्वारिष्टाङ्ग पीड़ा वारणनिमित्त मंत्राक्षर	३८-२
कायगुप्तिके अतिधार	३९-३
जीवसमास	३९-१
व्यवसायलाभसौख्यविजय निमित्त मंत्राक्षर	३९-२
चत्वारिंशदक्षरर्द्धिमंत्र	४०-४
पित्तकोपजरोज	४०-२
भारतमें ब्राह्मी निसृतलिपि	४०-३
राजा (जो प्रजाका पालन करे) के गुण	४०-५
समाभ्यर्थज्ञेयवस्तु	४०-१
जीवपद (नामकर्मोदयस्थानके)	४१-१
सान्तिपातिक भाव	४१-२
जीवसमास	४२-१

दुर्भिक्षादिभय वारणनिमित्त मंत्राक्षर	४२-३
सयोग केवलीमें उदय योग्य प्रकृति	४२-२
मिश्रगुणस्थानमें आश्रव	४३-२
राजमान्यतानिमित्तमंत्राक्षर	४३-३
शुभनामकर्माश्रव हेतु	४३-१
अन्तरायाश्रव हेतु	४४-१
समुद्रभयवारणनिमित्त मन्त्राक्षर	४४-३
सर्पविषदूरीकरण निमित्त मन्त्राक्षर	४४-२
अग्निबाधावारणनिमित्त मन्त्राक्षर	४५-२
जीवसमास	४५-१
अविरत सम्यक्त्व गुणस्थानमें आश्रव	४६-३
आहार दोष	४६-१
तीर्थंकर अर्हन्तके मूलगुण	४६-२
धनलाभनिमित्तमन्त्राक्षर	४६-४
सर्वभयवारणराजद्वाराधन लाभ निमित्त मन्त्राक्षर	४६-५
ध्रुवबंधी प्रकृति	४७–१
सर्वभयवारण निमित्त मन्त्राक्षर	४६–३
ज्ञानमात्रात्माकी प्रसिद्ध शक्ति	४७–२
केवल पुण्य प्रकृति	४८–४
जीवसमास	४८–१
दीक्षान्वय क्रिया	४८–२

मतिज्ञानके भेद	४८-३
सम्यग्दृष्टिके मूलगुण	४८-५
आलोचनाकल्पभङ्ग	४९-२
उदररोग वारण निमित्त मन्त्राक्षर	४९-४
प्रत्याख्यान कल्पभङ्ग	४९-३
प्रतिक्रमण कल्पभङ्ग	४९-१
युद्ध भयवारण निमित्त मंत्राक्षर	५०-४
विजयार्धदक्षिणश्रेणिनगर	५०-१
सम्यक्त्वके मल	५०-३
सासादनमें आश्रव	५०-२
जीवसमास	५१-१
सर्वसंक्रमण प्रकृति	५२-१
कर्मन्वय क्रिया	५३-३
जीवके भाव	५३-१
श्रावककी क्रियायें	५३-२
जीवसमास	५४-२
निरन्तर बंधी प्रकृति	५४-१
मिथ्यात्वमें आश्रव	५५-१
सम्पत्तिलाभ निमित्त मंत्राक्षर	५६-१
आश्रव	५७-२
जीवसमास	५७-१

मनोवाञ्छित सिद्धि निमित्त मंत्राक्षर	५७-४
क्षीणमोहमें उदय योग्य प्रकृति	५७-३
अपूर्वकरणमें बंध योग्य प्रकृति	५८-१
अप्रमत्तविरत गुणस्थानमें बंध योग्य प्रकृति	५९-१
उपशान्तमोहमें उदय योग्य प्रकृति	५९-२
श्वानविषनिवारण निमित्त मंत्राक्षर	५९-३
दुःखितनेत्रशांति निमित्त मंत्राक्षर	६०-३
विजयार्धोत्तर श्रेणिनगर	६०-१
सूक्ष्मसाम्परायमें उदययोग्य प्रकृति	६०-२
असातावेदनीयाश्रव हेतु	६१-१
पुद्गलविपाकी प्रकृति	६२-१
प्रमत्तविरत गुणस्थानमें बंध योग्य प्रकृति	६३-२
शिरपीड़ावारण निमित्त मंत्राक्षर	६३-४
सम्यग्दृष्टिके सर्वगुण	६३-३
सयोगकेवलीमें क्षीण प्रकृति	६३-१
लिपि	६४-१
अनिवृत्तिकरणगुणस्थानमें उदय योग्य प्रकृति	६६-१
देशविरत गुणस्थानमें बंध योग्य प्रकृति	६७-१
पुण्य प्रकृति	६८-१
एकसप्तत्यक्षर मंत्रवर्ण	७१-१
अपूर्वकरण गुणस्थानमें उदय योग्य प्रकृति	७२-३

अयोगिद्वि चरममें सावव्युच्छिन्न प्रकृति	७२-१
एकेन्द्रिय जीवसमास	७२-२
सम्यङ्मिथ्यात्वगुणस्थानमें बंध योग्य प्रकृति	७४-१
अप्रमत्तविरत गुणस्थानमें उदय योग्य प्रकृति	७६-१
षट्सप्तत्यक्षर मन्त्र वर्ण	७६-२
अविरत सम्यक्त्वगुणस्थानमें बंधयोग्य प्रकृति	७७-२
नामकर्मसप्तसप्तति प्रकृतिक सत्त्वस्थान प्रकृति	७७-१
जीव विपाकी प्रकृति	७८-१
नामकर्मदशमसत्त्वस्थान प्रकृति	७८-२
नामकर्मनवमसत्त्वस्थान प्रकृति	७९-१
प्रमाद	८०-३
नामकर्माष्टमसत्त्वस्थान प्रकृति	८०-१
वातकोपजरोग	८०-२
उदय व्युच्छित्ति पूर्व बंध व्युच्छिन्न प्रकृति	८१-१
प्रमत्तविरतगुणस्थानमें उदय योग्य प्रकृति	८१-२
उभय बंधी प्रकृति	८२-१
नामकर्मसप्तमसत्त्वस्थान प्रकृति	८२-२
नामकर्मषष्ठसत्त्वस्थान प्रकृति	८४-१
अयोगकेवली में सत्त्व योग्य प्रकृति	८५-१
देशसंयत गुणस्थानमें उदय योग्य प्रकृति	८७-१
ग्रह	८८-२

नामकर्मपञ्चमसत्त्वस्थान प्रकृति	८८-१
नामकर्म चतुर्थसत्त्वस्थान प्रकृति	९०-१
नामकर्म तृतीयसत्त्वस्थान प्रकृति	९१-१
नामकर्म द्वितीयसत्त्वस्थान प्रकृति	९२-१
नामकर्मकी प्रकृति	९३-१
नामकर्मप्रथमसत्त्वस्थान प्रकृति	९३-२
नारक जीवसमास	९८-१
इन्द्र	१००-२
पापप्रकृति	१००-१
सम्यङ्मिथ्यात्वगुणस्थानमें उदय योग्य प्रकृति	१००-३
अक्रोधानिवृत्तिकरणमें भावप्रकार	१०१-८
अघातिकर्म प्रकृति	१०१-३
अञ्जना में इन्द्रकश्रेणिबद्धबिल	१०१-१६
" श्रेणिबद्धबिल	१०१-१८
अप्रमत्तविरत में सत्व योग्य प्रकृति	१०१-३२
" क्षायिक सम्यग्दृष्टिमें सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१—३३
अपूर्वकरणमें भावप्रकार	१०१—६
अपूर्वकरणउपशमकद्वितीयोपशमसम्यक्त्वमें सत्व	१०१—३४
" " क्षायिक सम्यग्दृष्टिमें सत्त्व	१०१—३८
अपूर्वकरणक्षपकमें सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१—४२
अनिवृत्तिकरणउपशमकद्वितीयोपशमसम्यक्त्वमेंसत्व	१०१—३५

अनिवृत्तिकरणउपशमकक्षायिकसम्यक्त्वमेंसत्व	१०१-३६
अनिवृत्तिकरण क्षपकमें सत्त्व योग्य प्रकृति	१०१-४३
अरिष्टामें इन्द्रकश्रेणिबद्धविल	१०१-१५
" श्रेणिबद्धविल	१०१-१७
अविरत सम्यक्त्वमें उदय योग्य प्रकृति	१०१-२४
" " सत्त्व योग्य प्रकृति	१०१-२८
अवेदानिवृत्तिकरणमें भाव प्रकार	१०१-७
अणु	१०१-४६
अयोगी	१०१-४६
उपशान्तमोहद्वितीयोपशमसम्यक्त्वमेंसत्वयोग्यप्रकृति	१०१-३७
" क्षायिक सम्यग्दर्शनमेंसत्व	१०१-४०
क्रियावादियोंके कुवाद	१०१-१४
कर्मप्रकृति	१०१-२
तारा भरत क्षेत्रमें	१०१-४८
देव जीवसमास	१०१-४
देशसंयतमें सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-३०
नामकर्मके अल्पतरबंधभंग	१०१-११
नामकर्मके २६ प्रकृत्युदयस्थानभंग	१०१-१२
निर्माणानिवृत्तिकरणमें भाव प्रकार	१०१-६
निर्मायानिवृत्तिकरणमें भाव प्रकार	१०१-१०
प्रमत्तसंयतमें सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-३२

प्रमत्तविरतक्षायिकसम्यग्दृष्टिमें सत्त्व योग्य प्रकृति	१०१-३३
पाप	१०१-१
पूर्वोंकी वस्तुयें	१०१-१३
मिथ्यात्वमें बंधयोग्य प्रकृति	१०१-२०
" उदयोग्य प्रकृति	१०१-२२
" सत्त्व योग्य प्रकृति	१०१-२५
मिश्रमें सत्त्व योग्य प्रकृति	१०१-२७
विक्रिया	१०१-४७
सर्व जीवसमास	१०१-५
सवेदानिवृत्तिकरणमें भाव प्रकार	१०१-६
सासादनमें उदय योग्य प्रकृति	१०१-२३
" बंधयोग्य प्रकृति	१०१-२१
" सत्वयोग्य प्रकृति	१०१-२६
सूक्ष्मसाम्परायउपशमकद्वितीयोपशमसम्यक्त्वमेंसत्वयोग्यप्रकृति	१०१ ३६
" " क्षायिकसम्यक्त्वमेंसत्त्वयोग्यप्रकृति	१०१-४१
सूक्ष्म साम्परायक्षपकमें सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-४४
सूक्ष्मसाम्परायमें भावप्रकार	१०१-१०
सूक्ष्मसाम्पराय संयमी	१०१-१६
क्षायिक सम्यक्त्वमें सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-२६
क्षायिकसम्यग्दृष्टिदेशसंयतमें सत्त्वयोग्य प्रकृति	१०१-३१

क्षीणमोह सत्वयोग्य	१०१-४५
अग्न्याभलौकान्तिकदेव	१०२-११०
अग्निशिख इन्द्रके सामानिक	१०२-६५
अग्निवाहन इंद्रके सामानिक	१०२-७४
अञ्जनामें संख्यातयोजनके बिल	१०२-३२
अप्रमत्तविरतमें भावप्रकार	१०२-८
अमितगति इंद्रके सामानिक	१०२-६४
अमितवाहन इन्द्रके सामानिक	१०२-७३
अव्याबाध लौकान्तिकदेव	१०२-११५
अविरत सम्यक्त्वमें भावप्रकार	१०२-५
अरिष्ट लौकान्तिकदेव	१०२-११६
अश्वलौकान्तिकदेव	१०२-१२६
असुरेन्द्र सेनाके पहिली कक्षाके माहिष	१०२-१५२
आचाराङ्गमें पद	१०२-१३२
आत्मरक्षित लौकान्तिक	१०२-१२५
आदित्य लौकान्तिक	१०२-१०८
उपशमश्रेणिके गुणस्थानोंमें संयमी	१०२-१३६
" "	१०२-१४०
कामधर लौकान्तिक	१०२-१२२
ग्रहवाहकदेव	१०२-१४७
गर्दतोय लौकान्तिकदेव	१०२-११२

घोष इन्द्रके सामानिक	१०२-६२
चक्रीके म्लेच्छराजा	१०२-६१
" मुकुटबद्धराजा	१०२-६२
" नाट्यशाला	१०३-६३
" संगीतशाला	१०२-६४
" देश	१०२-६५
" नगर	१०२-६६
" खेट	१०२-६७
" कर्वट	१०२-६८
" मटम्ब	१०२-६९
" पट्टन	१०२-१००
" द्रोणमुख	१०२-१०१
" सेवादल	१०२-१०२
" दुर्ग	१०२-१०३
" युवती	१०२-१०४
" स्त्रीमें राजकन्या	१०२–१०५
" " विद्याधर कन्या	१०२–१०६
" " म्लेच्छ कन्या	१०२–१०७
चन्द्रवाहकदेव	१०२–१४५
चन्द्राभ लौकान्तिक देव	१०२–११७
चमरेन्द्रके सामानिक	१०२–३५

चमरेन्द्रके आदिमपरिषद	१०२-३६
" मध्यमपरिषद	१०२-३७
" बाह्य परिषद	१०२-३८
" प्रत्यग्र परिवार देवी	१०२-३९
" सर्वपरिवारदेवी	१०२-४०
" वल्लभा	१०२-४१
" सर्वदेवी	१०२-४२
" सभानिवासी	१०२-१५५
" जलप्रभके सामानिक	१०२-६१
" जलकान्तके सामानिक	१०२-७०
" तारकावाहकदेव	१०२-१४९
तुषित लौकान्तिकदेव	१०२-११४
दिगन्तरक्षित लौकान्तिक	१०२-१२४
देशसंयतमें भावप्रकार	११२-६
धम्मा पृथ्वीमें इन्द्रकश्रेणिबद्धबिल	१०२-२४
" केवल श्रेणिबद्धबिल	१०२-२८
धरणानंद इन्द्रके सामानिक	१०२-६७
" की वल्लभादि	१०२-८३
नक्षत्रवाहकदेव	१०२-१४८
नामकर्मके ४थे गुणस्थानमें भुजाकारबंधभंग	१०२-१९
" २८ प्रकृत्युदयस्थान भंग	१०२-२०

नामकर्मके २९ प्रकृत्युदयस्थान भंग	१०२-२१
" ३० "	१०२-२२
" ३१ "	१०२-२३
निर्माणरज लौकान्तिक	१०२-१२३
प्रतीन्द्रोंकी वल्लभा व देवी	१०२-८७
प्रथमानुयोगमें पद	१०२-१३५
प्रभंजन इन्द्रके सामानिक	१०२-७५
प्रमत्तविरतमें भावप्रकार	१०२-७
प्रमाद	१०२-१
परिहारविशुद्धिसंयमी	१०२-१३१
पूर्वोंके प्राभृतक	१०२-१३८
बह्नि नामक लौकान्तिक	१०२-१०९
भवनवासिके तृतीयेन्द्रकी पहिली कक्ष सेना	१०२-१५३
" शेष १७ इन्द्रकी प्रत्येककी " "	१०२-१५४
भूतानन्द इंद्रके सामानिक	१०२-५१
" आदिमपरिषद	१०२-५२
मध्यमपरिषद	१०२-५३
बाह्यपरिषद	१०२-५४
" प्रत्यग्रपरिवारदेवी	१२२-५५
" सर्वपरिवारदेवी	१०२-५६
" वल्लभा	१०२-५७

भूतानन्द इंद्रके सर्वदेवी	१०२-५८
भवनवासिके १७ इन्द्रोंके आदिमपरिषद	१०२-७६
" मध्यमपरिषद	१०२-७७
" बाह्यपरिषद	१०२-७८
" प्रत्यग्रपरिवारदेवी	१०२-७९
" सर्वपरिवारदेवी	१०२-८०
" वल्लभा	१०२-८१
" सर्वदेवी	१०२-८२
मघवीमें संख्यात योजन विस्तृत बिल	१०२-३३
" असंयख्यात " " "	१०२-३४
मरुत लौकान्तिकदेव	१०२-१२७
महाघोष इंद्रके सामानिक	१०२-७१
मिथ्यात्वमें भावप्रकार	१०२-२
मिश्रमें भावप्रकार	१०२-४
मेघापृथ्वीमें इंद्रक श्रेणिबद्धबिल	१०२-२६
" केवल " "	१०२-३०
मोहनीयके उदयस्थान भंग	१०२-९
मोहनीयके उदयके सर्वविध प्रकृति प्रमाण	१०२-१०
मोहनीयके योगके आश्रय स्थानभंग	१०२-११
" " " प्रकृतिप्रमाण	१०२-१२
" संयमके आश्रय स्थान भंग	१०२ १३

"	" प्रकृतिप्रमाण	१०२-१४
"	लेश्याकेआश्रय स्थानभंग	१०२-१५
"	" प्रकृतिप्रमाण	१०२-१६
"	सम्यक्त्वके आश्रय स्थान भंग	१०२-१७
"	" प्रकृतिप्रमाण	१०२-१८
लब्ध्यपर्याप्तकके भव		१०२-१३६
लोकपालों (भवनवासी) की वल्लभा व देवी		१०२-६०
वशिष्ट इंद्रके सामानिक		१०२–६६
वसुलौकान्तिकदेव		१०२-१२८
विश्वलौकान्तिकदेव		१०२-१३०
वृषभेष्टलौकान्तिक		१०२-१२१
वंशामें इंद्रक श्रेणिबद्धबिल		१०२-२५
वंशामें कवल " "		१०२-२६
वैरोचन इंद्रके सामानिक		१०२-४३
वैरोचन इंद्रके आदिम परिषद		१०२-४४
"	मध्यम परिषद	१०२-४५
"	वाह्य परिषद	१०२-४६
"	प्रत्यग्रपरिवारदेवी	१०२-४७
"	सर्वपरिवारदेवी	१०२-४८
"	वल्लभा	१०२-४६
"	सर्वदेवी	१०२–५०

वेणुदेवइंद्रके सामानिक	१०२-५६
वेणुधारी इंद्रके सामानिक	१०२-६८
वेणुवेणुधारी इन्द्रोंके प्रत्यग्रव सर्वपरिवारदेवी	१०२-८४
" " वल्लभा	१०२-८५
" " सर्वदेवी	११२-८६
वेलम्ब इन्द्रके सामानिक	१०२-६६
वैरोचनेन्द्रके सभानिवासी	१०२-१५६
श्रेयस्कर लौकान्तिकदेव	१०२-११६
शील	१०२-१३७
स्थानाङ्गमें पद	१०२-१३४
सत्याभलौकान्तिकदेव	१०२-११८
सर्वनरकोंमें इंद्रकश्रेणिवद्धबिल	१०२-२७
" केवल " "	१०२-३१
सर्वरक्षित लौकान्तिक देव	१०२-१२६
सामानिकों की [भवनवासी] वल्लभा व देवी	१०२-८८
सारस्वत लौकांतिक	१०२-१०७
सासादनमें भावप्रकार	१०२-३
सूर्यवाहकदेव	१०२-१४६
सूर्याभलौकान्तिक देव	१०२-११३
सूत्रकृतांगमें पद	१०२-१३३
हरीकान्त इन्द्रके सामानिक	१०२-७२

हिमवान पर्वतपर तारा	१०२-१५०
हैमवत क्षेत्रपर तारा	१०२-१५१
हरिषेणइन्द्रके सामानिक	१०२–६३
क्षपक संख्या	१०२-१४३
"	१०२-१४४
क्षपक श्रेणिके गुणस्थानोंमें संयमी	१०२-१४१
" " "	१०२-१४२
क्षेमंकर लौकान्तिक	१०२-१२०
त्रायस्त्रिंशों [भवनवासी] की वल्लभा व देवी	१०२-८६
अग्निकुमारोंके भवन	१०३-३२
अग्निशिखी इन्द्रके अधिकृत भवन	१०३-४२
" " तनुरक्षक	१०३-६६
अग्निवाहकके अधिकृत भवन	१०३-५२
" तनुरक्षक	१०३-७५
अञ्जनामें प्रकीर्णकबिल	१०३-५
" सर्वबिल	१०३-११
" असंख्यात योजनकेबिल	१०३-२२
अन्तःकृद्दशांगके पद	१०३-८७
अनुत्तरोपपादिकदशांगके पद	१०३-८८
अमितगति इंद्रके अधिकृत भवन	१०३-४१
" तनुरक्षक	१०३-६५

अमितवाहनके अधिकृत भवन	१०३-५१
" तनुरक्षक	१०३-७४
अरिष्टामें प्रकीर्णकबिल	१०३-४
सर्वबिल	१०३-१०
" संख्यातयोजनके बिल	१०३-१७
" असंख्यातयोजनके बिल	१०३-२१
अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्वके पद	१०३-६८
असुरकुमार देवोंके भवन	१०३-२४
आग्रायणी पूर्वके पद	१०३-६६
आनत प्राणतेन्द्रोंके प्रति सैन्य गज	१०३-१०८
आरणाच्युतेन्द्रो " " "	१०३-१०६
उदधिकुमारोंके भवन	१०३-२८
उपासकाध्ययनाङ्गके पद	१०३-८६
घोषभवनेन्द्रके अधिकृत भवन	१०३-३०
" " तनुरक्षक	१०३-६३
चक्रवर्तीके हाथी	१०३-७८
" रथ	१०३-७६
" ग्राम	१०३-८०
चन्द्रप्रज्ञप्तिके पद	१०३-६०
चमरेन्द्रके अधिकृत भवन	१०३-३४
" तनुरक्षक	१०३ ५४

चमरेन्द्रके एकैकसेना १०३-५५
जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिके पद १०३-९२
जलकान्तके अधिकृत भवन १०३-४८
" तनुरक्षक १०३-७१
जलप्रभके अधिकृत भवन १०३-३८
" तनुरक्षक १०३-६२
द्वीपकुमारोंके भवन १०३-२७
द्वीपसागर प्रज्ञप्तिके पद १०३-९३
दिक्कुमारोंके भवन १०३-३१
धम्मामें प्रकीर्णक बिल १०३-१
" " सर्वबिल १०३-७
" " संख्यातयोजन विस्तृतबिल १०३-१४
" " असंख्यातयोजन विस्तृतबिल १०३-१८
धर्मकथांङ्गके पद १०३-८५
धरणानन्दके अधिकृत भवन १०३-४५
" " तनुरक्षक १०३-६८
नागकुमारदेवोंके भवन १०३-२५
प्रत्याख्यानपूर्वकेपद १०३-९९
प्रभंजनके अधिकृत भवन १०३-५३
" " तनुरक्षक १०३-७६
प्रश्नव्याकरणांगके पद १०३-८९

पूर्णभुवनेन्द्रके अधिकृतभवन	१०३-३७
" " तनुरक्षक	१०३-६१
ब्रह्मेन्द्रके प्रतिसैन्यगज	१०३-१०४
बैलम्ब इन्द्रके अधिकृतभवन	१०३-४३
" तनुरक्षक	१०३-६७
वैरोचन इन्द्रके अधिकृत भवन	१०३-४४
" तनुरक्षक	१०३-५६
" एकैकसेना	१०३-५७
भवनवासीके शेष इन्द्रोंकी एकैकसेना	१०३-७७
भूतानंदके अधिकृत भवन	१०३-३५
" तनुरक्षक	१०३-५८
" एकैकसेना	१०३-५९
महाघोषके अधिकृतभवन	१०३-४९
" " तनुरक्षक	१०३-७२
महेन्द्रके प्रतिसैन्यगज	१०३-१०३
मेघामें प्रकीर्णक बिल	१०३-३
" सर्व बिल	१०३-८
" संख्यात योजन के बिल	१०३-१६
" असंख्यात योजन के बिल	१०३-२०
यथाख्यात संयमी	१०३-८२
व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगके पद	१०३-८४

व्याख्याप्रज्ञप्ति दृष्टिवादाधिकारके पद	१०३-९४
वशिष्ट इन्द्रके अधिकृतभवन	१०३-४७
» तनुरक्षक	१०३-७०
लान्तवेन्द्रके प्रतिसैन्यगज	१०३-१०५
वंशामें प्रकीर्णकविल	१०३-२
» सर्व विल	१०३-८
» संख्यातयोजनके बिल	१०३-१५
» असंख्यात योजनके बिल	१०३-१६
वायुकुमारोंके भवन	१०३-३३
विद्युत्कुमारोंके भवन	१०३-३०
वीर्यप्रवादके पद	१०३-६७
वेणुके अधिकृत भवन	१०३-३६
वेणुधारीके अधिकृत भवन	१०३-४६
» तनुरक्षक	१०३-६६
वेणुदेवके तनुरक्षक	१०३-६०
शतारेन्द्रके प्रतिसैन्यगज	१०३-१०७
शुक्रेन्द्रके प्रतिसैन्यगज	१०३-१०६
स्तनित कुमारोंके भवन	१०३-२६
सनत्कुमार इन्द्रके प्रतिसेनामें गज	१०३–१०२
समवायाङ्गके पद	१०३–८३
सयोगीजिन-	१०३–१००

सयोगी जिन	१०३-१०१
सर्व पृथ्वीमें प्रकीर्णक बिल	१०३-६
" " सर्व बिल	१०३-१२
" " असंख्यातयोजनके बिल	१०३-२३
संख्यातयोजन विस्तृत बिल	१०३-१३
संसारी जीवों की योनि	१०३-८१
सुपर्णकुमार देवोंके भवन	१०३-२६
सूर्य प्रज्ञप्तिके पद	१०३-६१
सूत्रदृष्टिवादाधिकारके पद	१०३-६५
हरिकान्तके अधिकृतभवन	१०३-५०
" तनुरक्षक	१०३-७३
हरिषेण इन्द्रके अधिकृतभवन	१०३-४०
" " तनुरक्षक	१०३-६४
अग्निवाहन इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-२२
अग्निशिखि इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१३
अप्रमत्तगुणस्थानवर्ती जीव	१०४-५७
" "	१०४-५८
अमितगति इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१२
अमितवाहन इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-२१
आकाशगता चूलिकामें पद	१०४-४०
आत्मप्रवादमें पद	१०४-४५

ईशानेन्द्र के प्रतिसैन्यपद	१०४-६४
उत्पादपूर्वमें पद	१०४-४२
एकादश अङ्गोंमें सर्वपद	१०४-३३
क्रियाविशालमें पद	१०४-५०
कर्मप्रवादमें पद	१०४-४६
कल्याणवादमें पद	१०४-४८
घोषकी सर्वसेना	१०४-१०
चक्रवर्तीका बंधुकुल	१०४-२४
" की गायें	१०४-२५
" " थाली	१०४-२६
" के अश्व	१०४-२७
" " उत्तमवीर	१०४-२८
" " पदाति	१०४-२६
चमरेन्द्रकी सर्वसेना	१०४-४
चतुर्दश पूर्वोंमें पद	१०४-३५
चूलिकाओंमें सर्वपद	१०४-३१
छेदोपस्थापना संयमी	१०४-४१
जलकान्त इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१८
जलगता चूलिकामें पद	१०४-३६
जलप्रभ की सर्वसेना	१०४-१६
ताल	१०४-६६

देशसंयत मनुष्य	१०४-५२
धरणानंद इन्द्रकी सर्व सेना	१०४-१५
प्रमत्तगुणस्थानवर्ती जीव	१०४-५५
" "	१०४-५६
प्रभंजन इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-२३
प्राणवादमें पद	१०४-४६
परिकर्ममें पद	१०४-३४
भवनवासियोंके भवन	१०४-३
भूतानंदकी सर्वसेना	१०४-६
मनःपर्ययज्ञानीजीव	१०४-६१
महाघोष इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१६
मायागता चूलिकामें पद	१०४-३८
मिथ्यात्वमें भुजकारबंध	१०४-१
रूपगता चूलिकामें पद	१०४-३६
वशिष्ट इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१७
वादित्र	१०४-६७
विद्यानुवादमें पद	१०४-४७
विपाकसूत्रमें पद	१०४-३२
वेणुकी सर्वसेना	१०४-७
वेणुधारी इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१६
वेलम्ब इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-१४

वैरोचनकी सर्वसेना	१०४-५
स्थलगता चूलिकामें पद	१०४-३७
सत्यप्रवादमें पद	१०४-४४
सर्व अप्रमत्तसंयमी जीव	१०४-६०
सर्व संयमी जीव	१०४-५९
सर्व स्वर	१०४-६५
सामायिक छेदोपस्थापना संयमी	१०४-६२
सामायिक संयमी	१०४-३०
सासादनमें अल्पतर बंधभंग	१०४-२
सासादनवर्ती मनुष्य	१०४-५३
" "	१०४-५४
सौधर्म इन्द्रके प्रतिसैन्यगज	१०४-६३
हरिकान्त इन्द्रकी सर्वसेना	१०४-२०
हरिषेण की सर्वसेना	१०४-११
त्रिलोकविन्दुसारमें पद	१०४-५१
ज्ञानप्रवादमें पद	१०४-४३
असंयत सम्यग्दृष्टि मनुष्य	१०५-३
कुल (जीवोंके देहके कुल)	१०५-१
मध्यमपदके वर्ण	१०५-२
मिश्रगुणस्थानवर्ती मनुष्य	१०५-४
" "	१०५-५

अद्धासागरमें अद्धापल्य	१०६-२
अवसर्पिणीमें सागर	१०६-५
उत्सर्पिणीमें सागर	१०६-४
उद्धासागरमें उद्धार पल्य	१०६-३
कल्पकालमें सागर	१०६-१
चक्रवर्तीके हल	१०६-'
पर्याप्तमनुष्य	१०७-१
" "	१०७-५
पर्याप्त मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि	१०७-२
मिथ्यादृष्टि मानुषी	१०७-३
सर्वार्थसिद्धिविमानवासीदेव	१०७-४
अग्निकायिक	१०८-८८
अञ्जनापृथ्वीमें नारकी	१०८-१२
अनुभय मनयोगी	१०८-१२७
"वचन योगी	१०८-१३४
अनुदिशविजयादि चारमें देव	१०८-७०
अपकायिक	१०८-८९
अपर्याप्तपञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च	१०८-४
अपर्याप्तमनुष्य	१०८-५
अरिष्टा पृथ्वीमें नारकी	१०८-१३
अवधिज्ञानी	१०८-१४२

अवधिदर्शना	१०८-१४३
अविरतसम्यग्दृष्टि	१०८-४
असत्यमनोयोगी	१०८-१२५
आनतप्राणतारणयुतग्रैवेयकवासी देव	१०८-६६
उपशमसम्यग्दृष्टि	१०८-१५१
उभयमनोयोगी	१०८-१२६
ऊपर (दूसरेसे ऊपर) के स्वर्गकी देवियोंमें मिथ्यात्व रहित देवियां	१०८-४०
चतुरिन्द्रिय	१०८-७७
" पर्याप्त	१०८-७८
" अपर्याप्त	१०८-७९
चक्षुदर्शनी	१०८-१४४
" कालमुखेन	१०८-१४५
" क्षेत्र मुखेन	१०८-१४६
ज्योतिष्क देव	१०८-५६
तिर्यञ्चोंमें सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८-१९
" मिश्र	१०८-२०
" अविरतसम्यग्दृष्टि	१०८-२१
तीर्थंकरके जन्मोत्सवपर सौधर्मस्वर्गमें सम्मिलित देव	१०८-१५३
तेजोलेश्या वाले जीव	१०८-१३१

द्वीन्द्रिय	१०८-७१
" पर्याप्त	१०८-७२
" अपर्याप्त	१०८-७३
देवोंमें सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८-२२
" मिश्र "	१०८-२३
" अविरत "	१०८-२४
देव	१०८-५२
देव कालमुखेन	१०८-५३
देव क्षेत्रमुखेन	१०८-५४
देशसंयत जीव	१०८-५
धम्मा पृथ्वीमें उत्पन्न नारक	१०८-१
नारक सासादनसम्यग्दृष्टि	१०८-१६
" मिश्र	१०८-१७
" अविरत सम्यग्दृष्टि	१०८-१८
पञ्चेन्द्रिय	१०८-८२
" कालमुखेन	१०८-८३
" क्षेत्रमुखेन	१०८-८४
पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त	१०८-८५
पञ्चेन्द्रियोंमें सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८-२५
" मिश्र	१०८-२६
" असंयत सम्यग्दृष्टि	१०८-२७

पञ्चेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि तिर्यन्च	१०८-४१
" " कालमुखेन	१०८-४२
" " क्षेत्रमुखेन	१०८-४३
पद्मलेश्या वाले जीव	१०८-१४६
पुंवेदी	१०८-१३८
पृथ्वीकायिक	१०८-८६
बादर पृथ्वीकायिक	१०८-६०
" जलकायिक	१०८-६१
बादर अग्निकायिक	१०८-६२
" वायुकायिक	१०८-६३
" वनस्पतिकायिकप्रत्येक	१०८-६४
" अपर्याप्त पृथ्वीकायिक	१०८-६५
" " वायुकायिक	१०८-६६
" " वनस्पतिप्रत्येक	१०८-६७
बादर पर्याप्त पृथ्वीकायिक	१०८-११०
" " " कालमुखेन	१०८-१११
" " " क्षेत्रमुखेन	१०८-११२
" " जलकायिक	१०८-११३
" " वनस्पतिकायिक प्रत्येक	१०८-११४
" " अग्निकायिक	१०८-११५
" " वायुकायिक	१०८-११६

बादर पर्याप्त वायुकायिक कालमुखेन	१०८-११७
" " " क्षेत्रमुखेन	१०८-११८
भवनवासी देव	१०८-५७
" " कालमुखेन	१०८-५८
" " क्षेत्रमुखेन	१०८-५९
भवनवासियोंमें सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८-३१
" मिश्र	१०८-३२
" असंयत सम्यग्दृष्टि	१०८-३३
" मिथ्यादृष्टि	१०८-६०
मघवी पृथ्वीमें नारकी	१०८-१४
मतिज्ञानी	१०८-१४०
मनोयोगी	१०८-१२३
माघवी पृथ्वी (७ वें नरक) में नारकी	१०८-१५
मिथ्यादृष्टि नारकी	१०८-७
" कालमुखेन	१०८-८
" " क्षेत्रमुखेन	१०८-९
मिथ्यादृष्टि मनुष्य	१०८-४८
" " कालमुखेन	१०८-४९
" " क्षेत्रमुखेन	१०८-५०
मिथ्यादृष्टि देव	१०८-५५
मेघा पृथ्वीमें नारकी	१०८-११

योनिमती पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें सासादन	१०८-२८
" " " मिश्र	१०८-२९
" " " अविरत सम्यग्दृष्टि	१०८-३०
योनिमती पञ्चेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि	१०८-४४
" " " कालमुखेन	१०८-४५
" " " क्षेत्रमुखेन	१०८-४६
व्यंतर देव	१०८-६१
" कालमुखेन	१०८-६२
" क्षेत्रमुखेन	१०८-६३
व्यंतरोंमें सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८-३४
व्यंतरोंमें मिश्र	१०८-३५
" असंयत सम्यग्दृष्टि	१०८-३६
" मिथ्यादृष्टि	१०८-६४
वचनयोगी	१०८-१३१
" कालमुखेन	१०८-१३२
" क्षेत्रमुखेन	१०८-१३३
वंशा पृथ्वीमें नारकी	१०८-१०
वायुकायिक	१०८-८९
विकलत्रय कालमुखेन	१०८-८०
" क्षेत्रमुखेन	१०८-८१
विभंग ज्ञानी	१०८-१३९

वेदक सम्यग्दृष्टि	१०८-१५०
वैक्रियक काययोगी	१०८-१३५
" मिश्रकाय योगी	१०८-१३६
श्रुत ज्ञानी	१०८-१४१
शुक्ल लेश्यावाले जीव	१०८-१४८
स्त्री वेदी	१०८-१३७
सत्यमनोयोगी	१०८-१२४
सनत्कुमारसे सहस्त्रारतक के देव	१०८-६८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१०८-३
संज्ञी जीव	१०८-१५२
सर्वनारकी	१०८-६
सासादन सम्यग्दृष्टि	१०८-२
सूक्ष्म पृथ्वीकायिक	१०८-९८
" जलकायिक	१०८-९९
" अग्निकायिक	१०८-१००
" वायुकायिक	१०८-१०१
" पर्याप्त पृथ्वीकायिक	१०८-१०२
" " जलकायिक	१०८-१०३
" " अग्निकायिक	१०८-१०४
" " वायुकायिक	१०८-१०५
" अपर्याप्त पृथ्वीकायिक	१०८-१०६

" " जलकायिक	१०८-१०७
" " अग्निकायिक	१०८-१०८
" " वायुकायिक	१०८-१०९
सौधर्मेशान कल्पवासी देव	१०८-६५
" " कालमुखेन	१०८-६६
" " क्षेत्रमुखेन	१०८-६७
सौधर्मेशानकल्पवासी देवोंमें सासादन	१०८-३७
" " मिश्र	१०८-३८
" " अविरत सम्यग्दृष्टि	१०८-३९
त्रसकायिक	१०८-११९
" कालमुखेन	१०८-१२०
" क्षेत्रमुखेन	१०८-१२१
त्रसकायिक पर्याप्त	१०८-१२२
त्रीन्द्रिय	१०८-७४
" पर्याप्त	१०८-७५
" अपर्याप्त	१०८-७६
अभव्य	१०९-१
सम्यक्त्व से च्युत जीवोंके अधिकाधिकभव	१०९-२
अकषायी जीव	११०-४३
अचक्षुर्दर्शनी जीव	११०-४९
अनाहारक जीव	११०-५८

असंयत जीव	११०-४८
असंज्ञी जीव	११०-५५
आहारक जीव	११०-५६
एकेन्द्रिय	११०-८
" पर्याप्त	११०-९
" अपर्याप्त	११०-१०
एकेन्द्रिय नवों प्रकार के प्रत्येक	११०-१७
" " "	११०-१८
औदारिक काय योगी	११०-३६
" मिश्रकाययोगी	११०-३७
क्रोधी जीव	११०-३९
कापोतलेश्यावाले जीव	११०-५२
काय योगी	११०-३५
कुमति ज्ञानी जीव	११०-४४
कुश्रुत ज्ञानी जीव	११०-४५
कृष्णलेश्या वाले जीव	११०-५०
केवलज्ञानी जीव	११०-४६
केवलदर्शनी जीव	११०-४७
तिर्यञ्च	११०-४
" कालमुखेन	११०-५
" क्षेत्रमुखेन	११०-६

तिर्यञ्चमिथ्यादृष्टि	११०–७
नपुंसक वेदी	११०–३८
निगोद जीव	११०-२०
नील लेश्या वाले जीव	११०-५१
बादर एकेन्द्रिय	११०-११
” ” पर्याप्त	११०-१२
” ” अपर्याप्त	११०-१३
” वनस्पति कायिक	११०-२१
” पर्याप्त वनस्पति कायिक	११०-२३
” अपर्याप्त वनस्पति कायिक	११०-२४
” निगोद	११०-२७
” पर्याप्त निगोद	११०-२६
” अपर्याप्त निगोद	११०-३०
भव्य जीव	११०-५३
मस्नी जीव	११०-४०
मायावी जीव	११०-४१
मिथ्यादृष्टि	११०-१
” कालमुखेन	११०-२
” क्षेत्रमुखे	११०-३
लोभी जीव	११०–४२
वनस्पति कायिक	११०–१६

वनस्पतिकायिक व निगोदादि १४ प्रायेक
" "

सञ्चितकार्मणिकाययोगी	११०-५७
सूक्ष्मएकेन्द्रिय	११०-१४
" " पर्याप्त	११०-१५
" " अपर्याप्त	११०-१६
" वनस्पतिकायिक	११०-२२
" पर्याप्त वनस्पति कायिक	११०-२५
" अपर्याप्त "	११०-२६
सूक्ष्मनिगोद	११०-२८
" पर्याप्त निगोद	११०-३१
" अपर्याप्त "	११०-३२
क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव	११०-५४